



کتابخانه

فصل  
کاشانی



# کرشن لیللا





## جملہ حقوق بحق مُصنّف محفوظ

- ۱۔ ٹائٹل کُرشن لپلا
- ۲۔ صفحہ ۱۹۲
- ۳۔ عکس جنوری ۱۹۸۳ء
- ۴۔ کاتب مُصنّف
- ۵۔ آرٹ تہ حاشیہ ( // )

۷۔ مومل (شیٹھ روپیہ) -/60 Rs.

۸۔ چھاپ خانہ :-

## کھانا-لیلا

پرنٹرائنڈ پبلشر :-

فاضل کشمیری

ساکنہ گلشن نگر - چھاپورہ - سرنگر

کشمیر ۱۹۰۱۵

مجموعہ شرمیلکوت کیتاؤنیکی قدیم روحانی کتابوں میں بے نظیر اہمیت رکھتا ہے۔ اس کا



سورگیہ شریعتی مایا وندی بترا  
کی سمرتی میں سمریت  
(مُصَنَّف)

स्वर्गीया  
श्रीमती मायावंती बतरा  
की  
पुण्य स्मृति में  
समर्पित

फाजिल कश्मीरो





بنووم پان موہلی سوز پورمس  
 میترو اوُس تہ انگ انگ ساز کوہمس  
 ووزس یس نش چھیلتھ تھنوس کدورت  
 تلخہ زنگار نوڈک سپہ پورمس

شریذ گیتاجی کس قسم کے فوق البشر انسان (Superman) پیدا کرنا چاہتی ہے



इहैव वैजितः

नाभिमानन्दति न इहैव तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥७॥



## नूरुक् आयि

वनोबुम पान मोरली सोज् बोरमस

मेच्युव ओसुस त अंग अग साज् कोरमस

बोजुस यस निश छलिष छ'न्यमस कदूरथ

तुलिथ जंगार' नूरुक् आयि पोरमस

नोट : नूरुक् आयि :— (सूरै नूरुक् आयि,

सूरै नूर छु कुरानिमजोदुक अस्त सूरै शरीफ)

स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा

स्वमक्षयमश्नुते ॥२१॥ दुःखेष्वनुद्विगमनाः सुखेषु विगतस्पृहः

वासस्यैवसकात्मा विन्दत्यात्मानं  
न स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा

शुभाशुभः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभः



## حرفِ اول

قومی بھائی چارہ کی لگن برقرار رکھنے کے سلسلہ میں یہ کتاب  
 کرشن لپلا میری تیسری ادبی کوشش ہے۔ اسے تخلیق کرنے اور  
 شایانِ شان تعمیر کرنے میں مجھے ایشور اللہ کی ہمہ گیر بخشش شامل  
 رہی جو میرے نصیب کے کارن ہے۔ مجھے اس کتاب کی ترمیم  
 (Decorations) اور کتابت خود کرنے میں دلی مسرت حاصل ہے۔

زیرِ نظر کتاب "کرشن لپلا" کی تکمیل میں مجھے محترمہ  
 ڈاکٹر جگت موہنی صاحبہ، پروفیسر چمن لال جاسپرو اور پندت  
 سائل کاشمیری صاحبہ نے تعاون دیا، اور گنیش مندر پر بندھاک  
 سمیتی سرنگر اور سناتن دھرم پرتاپ بھاسرنگر نے مالی امداد  
 دی۔ میں نے رسالہ کلیان اور اسکان بکس کلیفورنیا سے  
 کافی قایده اٹھایا، میں ان کا دل کی گہرائیوں سے مشکور ہوں۔

اس کتاب میں جتنے بھی اندراجات ہیں، مجھے ان کی چند خامیوں



## \* दो शब्द \*

कौमी भाईचारे की लगन बरकरार रखने के सिलसिले में यह किताब “कृष्ण लीला” मेरी तीसरी अदबी कोशिश है। इसे तखलीक करने और शायानि-शान तामीर करने में मुझे ईश्वर-अल्लाह की हमागीर बख्शिश शामिल-इ-हाल रही जो मेरे नसीब के कारण है — मुझे इस किताब की तजईन (Dec-oration) और किताबत खुद करने में दिल्ली मस्सरत हासिल है ।

जेर-इ नजर किताब की तकमील के दौरान मुझे जिन कृष्ण-भक्तों ने अपना ताऊन दिया उनके अस्माएगरामी इस तरह से हैं — श्री धर्मवीर बतरा डा० जगत मोहिनी साहिबा, प्रोफेसर चमनलाल सप्रू साहिब और पण्डित पृथ्वी नाथ कोल “साइल-कश्मीरी” और जिन रसाईल से मैंने इस्तिफादा किया उनमें “कल्याण” गोरखपुर का नायाब खसूसी “भागतङ्क”, और Iscon Books, California, काबिजि जिक्र हैं ।

इस किताब में जितने भी इन्दराजात हैं, मुझे उनकी चन्द खामियों की तरफ इशारा



کی طرف اشارہ کرنے میں کوئی جھجک محسوس نہیں ہوتی۔ میں نے بنیادی  
 طور پر ایک مسلمان گھرانے میں جنم لیا، اور اپنی تعلیم و تربیت کے دس اوّلیٰ  
 سال اسلامیہ سکولوں میں گزرا۔ اسے میں اور اردو، عربی اور فارسی  
 کے ماہرین اساتذہ علماء وقت سے زبان و خیالات کی چاشنی  
 کا نقشہ اُتار رہے۔ اس لئے میری کرشن لیلّاؤں میں مذکورہ علوم کے ذخائر  
 کی جھلکیاں ابھرتی ہیں۔ یہ کہنا بے جا نہ ہو گا کہ لکھوتی سہا سے  
 فراق گور کھپوری کے کلام میں جا بجا ہندوستانی تہذیب کے پہلو پہلو  
 ہندی بھاشا کی کرشن جملہ لاتی ہیں جو ایک فطری امر کا سہائینہ دار ہے۔  
 دوسری بات اس حقیقت کی نشاندہی ہے کہ نعت کہنا میری سرشت  
 میں شامل ہے۔ اس لئے اس رنگ اور کیف و گداز سے بھی الگ  
 نہیں رہ سکتا۔

ممکن ہے کہ قارئین حضرات میری کرشن لیلّا پڑھ کر یأس کر  
 یہ بھی اندازہ کریں گے کہ لیلّا کار فائنل کی شاعری اور خیالات و بیانات کا



करने में कोई भिन्नक मझूस नहीं होती — मैंने बुनियादी तौर पर एक मुसलमान घराने में जन्म लिया और अपनी तालीम-वतरबिबत के दस अवायली साल इस्बामिया स्कूलों में गुजारे हैं और उर्दू, फारसी और अरबी के माहिरीन असातिजा उल्माए वक्त से जबान-ब-खयालात की चाशनी का नकशा उतारा है — इसलिए मेरी कृष्ण लीलाओं में मजकूरा अलूम के जवाइर की झलकियां उभरती हैं । यह कहना बेजा न होगा कि रघुपति सहाय फिराक गोरख-पुरी के कलाम में जा बजा हिन्दुस्तानी तहजीब के पहलू-ब-पहलू हिन्दीभाषा की किरणें झिलमिलाती हैं; जो एक फितरी अम्र का अईनादार है । दूसरी बात इस हकीकत की निशानदिहो है कि “नात” कहना मेरी सिरिस्त में शामिल है — इस लिए रंग और कंफ-व-गुदाज से भो अलग नहीं रह सकता —

मुमकिन है कारीन हजरात मेरी “कृष्ण-लीला” पढकर या सुनकर यह भी अन्दाजा करेंगे कि लीलाकार फाजिल की शायरी और खयालात और बयानात का Convas बहुत बसीह है या वह तख-



کنواس بہت وسیع ہے۔ یا وہ تخیل کے ایک حلقہ سے نکل کر دوسرے  
حلقہ میں پڑنے میں کچھ تامل نہیں کرتا۔ یا یہ کہ وہ عاشق رسولؐ  
ہونے کے دوش بدوش کرشن بھگت اور گور بھگت بھی ہے۔  
کیونکہ فاضل نے ستگور و سری بابا گورونانک دیوجی پر بھی اپنی  
کئی تخلیقات بھینٹ چڑھائی ہیں۔ یا یہ کہ وہ مسلمان ہونے کے  
ساتھ ہندو بھی ہے اور سکھ بھی۔ میرا جواب کیا ہوگا؟۔۔۔۔۔  
کچھ بھی نہیں۔۔۔ ہاں! اتنا کہوں گا کہ لوگ مجھے شاعر کہتے ہیں۔

یہاں چند عاصیوں کے سوال کا جواب دینے میں  
مجھے تامل نہیں کہ میں نے اپنی عمر کے گرانقدر اور  
مصروف ترین مہ و سال کرشن لیلہ تصنیف اور  
مرتب کرنے میں اس لئے صرف کئے کہ سری گیت جی کے  
مندرجہ پیغامات اور خاص طور پر اس مقدس سلوک کا



ययुल के एक हलके से निकलकर दूसरे हलके में कुछ तअमूल नहीं करता—या यह कि वह आशकि रसूल होने के दोश-बदोश कृष्ण - भगत और गुरु भगत भी है — क्योंकि फाजिल ने सतगुरु सिरी बाबा गुरु नानक देव जी पर भी अपनी कई तखलकात भेंट चढाई हैं या यह कि वह मुसलमान होने के साथ साथ हिन्दु भी है और सिख भी — मेरा जवाब क्या होगा ? ..... कुछ भी नहीं..... हां । इतना कहूँगा कि लोग मुझे “शायिर” कहते हैं —

यहां चंद आभियों के सवाल का जवाब देने में मुझे तअमूल नहीं कि मैंने अपनी उम्र के गरां कदर और मसरूफ तरीं मह-ब-साल कृष्ण लीला तसनीफ और मुरतब करने में इसलिए सरफ किये कि श्री गोता जी के मुन्दरजा पैगामात और खास तौर पर इस मुकद्दस श्लोक का मैं कायिल हूं ।



कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।  
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

میں قایل ہوں ۔  
ترجمہ :-



your right is  
to work only , but  
never to the fruit  
thereof . Let not  
the fruit of action  
be your object ,  
nor let your  
attachment be  
to inaction .

تمہیں کام کرنا ہے اور مرد کار  
نہیں اس کے پھل پر تمہیں اختیار  
کئے جا عمل اور نہ ڈھونڈ اس کا پھل  
عمل کر عمل کرنے ہو بے عمل

آتا ہے کہ وسیع النظری سے

نوائے گئے قارئین اور سامعین میری کرشن لیلا سے کافی حد تک متاثر ہونگے جس سے  
ان کے دلوں میں بھائی چارہ کے جذبات ابھر آئیں گے ۔

فاضل کشمیری

گلشن نگر سربنگر 15

1-1-1984



कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।  
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

तुझे काम करना है ओ मर्द ए कार  
नहीं उसके फल पर तुझे इस्तिवार ।  
किये जा अमल और न ढूँढ-इसका फल  
अमल कर, अमल कर, न हो वे अमल ॥

आशा है कि वसीह-उल-नजरी मे नवाजे गए  
कायरोन् और सामियोन मेरी “ कृष्ण-लीला ” से  
काफी हद तक मुतासिर होंगे — जिससे उनके दिलों  
में भाई चारा के जजबात उभर आयेंगे ॥

**फ़ाजिल कश्मीरी**

गुलशन नगर  
श्रीनगर-१९००१५  
१-१-१९८४



## कश्मीर के रसखान

फाजिल कश्मीरी ने 'बालक अवस्था' और 'कृष्ण लोला' नामक कृष्ण-काव्यों की रचना करके सूरदास, रसखान, परमानंद, नरोत्तमदास, रत्नाकर सुब्रह्मण्य भारती की कृष्ण-भक्ति-परम्परा को सुरक्षित रखा। इसके साथ राष्ट्रीय एकता और हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव को बढ़ावा देने में हम उन्हें अमीर-खुसरो, नजीर अकबराबादी, सागर निजामी, बेकल उत्साही, नजीर बनारसी आदि की परम्परा में प्रतिष्ठित पाते हैं। सिखमत के प्रति भी उन्होंने अपना अनुराग दर्शाया है और कश्मीरी भाषा में गुरु-वाणी का भावानुवाद प्रस्तुत किया है, जिसकी अत्यधिक सराहना की गई।

फाजिल कश्मीरी ऐसे उदारचेता कवि हैं जो भावात्मक एकता के तारों को भङ्ग कर राष्ट्रीय एकता और सौहार्दपूर्ण वातावरण की संरचना में कृतसंकल्प हैं। उनकी कविता में हिन्दू मुस्लिम एकता की भावना को ही प्रधानतया अभिमुखित



किया गया है — कृष्ण की बांसुरी का मधुरिम स्वर एक हृदय-भावात्मक ऐक्य का संदेश देता है । वही 'जय-जय हरि' कहने लगता है । उसका हृदय پاک-पवित्र हो जाता है, फिर उसमें हिन्दू-मुसलमान का कोई भेद नहीं रहता । फाजिल साहब कृष्ण को गंगा का ऐसा पावन अल समझते हैं, जो हिन्दू और मुसलमान दोनों के दिलों के मेल को धो डालता है —

कृष्ण गो पोशवुन गंगायि हुंद जल,  
छलान हेंचन मुसलमानन दिलुक मल ।

फाजिल साहब कृष्ण की बांसुरी की मधुरता पर मोहित हैं । बांसुरी का स्वर प्रेमात्मा है, जीवन - ऊर्जा है, 'साजे दिलबरी' है । बांसुरी में रुक मारकर उन्होंने आत्मज्ञान का दार्शनिक रहस्य उद्घाटित किया है । ऐसी खुदी या अहमन्यता उद्भासित की है जिसपर हजारों बेखुदो कुर्बानी जासकती हैं । इसी बांसुरी से यह आवाज निकल रही है कि अवतार और नबी दोनों अल्लाह के भेजे हुए हैं उनकी मुरली और लय दोनों एक ही हैं, 'रहमान' और 'भगवान' भी ती एक ही समान हैं । कृष्ण के रूप-रंग पर कवि अत्यधिक मोहित है । उसे ऐसा आभास होता है कि फूलों में रंगत कृष्ण की बर्नलन है, उनके कारण यह संसार सुरम्य उपवन बना हुआ है । जिन व्यक्तियों



के हृदय में प्रेम-सत्य की चिंगारी सुलगती है उन्हीं को कृष्ण अमृत के प्याले पिलाते हैं। कृष्ण समदर्शी हैं। फाजिन साहब समझते हैं कि लोगों में जो भाईचारा, सद्भाव, सोहार्द है वह सब कुछ कृष्ण के दम से है। उनका 'कृष्ण लीला' (सचित्र) कृष्ण-काव्य में—भारतीय कृष्ण-काव्य में एक अभिवृद्धि है और वह राष्ट्रीय एकता के दीपक की लौ को सदा अकम्पित रखने वालों में अपना स्थान रखते हैं।

निजामउद्दीन

( निजामउद्दीन )

DR. NIZAM-UD-DIN

Prof. of Hindi

Islamia College, Srinagar

(Kashmir)

१२-१-१९५४



contact with them. Similarly, the devotees who have taken shelter

## TEXT 38

एतदीशनमीशस्य प्रकृतिर्योऽपि तद्गुणैः ।  
न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥३८॥

etad īśanam īśasya  
prakṛti-stho 'pi tad-guṇaiḥ  
na yujyate sadātmasthair  
yathā buddhis tad-āśrayā

of the Lord do not become influenced by the material qualities.



“मुरली शब्दा गव असि कनन  
वनन छि राधाकृष्ण है भाव”

“مورلی شبلہ اسہ گوکنن وشن چھ راڈھا کرشنہ ہے آو”

## TRANSLATION

This is the divinity of the Personality of Godhead: He is not

affected by the qualities of material nature, even though He is in



# ترتیب

شمار	مطلع	صفحہ شمار	مطلع	صفحہ
۱۔	قطعہ ۱: اگر چھپے ظون سم	۲۲	۱۳۔	قطعہ: شبیبہ و جیم ۳۶
۲۔	کرسنا کرشنا	۲۳	۱۴۔	شری کرن پوزا ۳۷
۳۔	قطعہ: پتاماتا کرشن	۲۴	۱۵۔	پیمس پرشس نزم ۳۸
۴۔	کرشن پندری پاٹھ مخلوقن	۲۵	۱۶۔	پیرن گیتا تہ ۳۹
۵۔	قطعہ: پیر لونی	۲۶	۱۷۔	کرشنہ خان گورنگھ ۴۰
۶۔	کرشن مودرتان بجائے ہیں	۲۷	۱۸۔	کرشنہ مہارجن دیا گہ ۴۱
۷۔	نوبصورت سانیہ آنکھ	۲۸	۱۹۔	گیان بلو منگل کور ۴۲
۸۔	قطعہ: شہکار قطعہ	۳۰	۲۰۔	پیمو لہرو و پرک ۴۳
۹۔	تہہ یا ستھ کھولتھ	۳۳	۲۱۔	میو واجینو ۴۴
۱۰۔	پریکشمہ شریا	۳۲	۲۲۔	چھ کردارک تھز ۴۵
۱۱۔	چانہ پریکشمہ زوگ	۳۴	۲۳۔	سور داس ۴۶
۱۲۔	میں دل اوس	۳۵	۲۴۔	کرکھ اود کرشنہ سودا ۴۷
			۲۵۔	کرشنہ چوئے نقشہ پاچم ۴۸



۲۱. قطعہ: کرشنی پرن 49
۲۲. "رادھا چھ آمتر 50
۲۳. "والہ شو بیا میون دل 51
۲۴. گیش میسن بالکس نش 52
۲۵. "شری کرشنا امانک ویش 53
۲۶. ونہ ون ستم توی 54
۲۷. روپ میون اوس 55
۲۸. جے پنن منز گردان 58
۲۹. نظم کرشن جی 60
۳۰. قطعہ: یا کشر دیت 62
۳۱. کرشنہ موری پر تھ زناہ 63
۳۲. "گیا لاچھو لن گل 64
۳۳. منز ویا تھ - آتہ نابہ 68
۳۴. کرشنہ - سالہ یو! 72
۳۵. مہن کن وچھ 74
۲۱. گپالی دوی چھ 78
۲۲. قطعہ: چھنڈو روپ میسن گور 80
۲۳. "اندس پیچھ - واصل 81
۲۴. "گیو چھنڈو تہ گرس 82
۲۵. "پرکھ یو کرشنہ لیل 83
۲۶. "کران پوزا کرشن جی 84
۲۷. تصویر - کرشن پوزا 85
۲۸. کرشن سدا ما 86
۲۹. قطعہ: اکھ سدا ماچھا 97
۳۰. کرشن گودون سمت 98
۳۱. قطعہ: غریبن مفلسن 99
۳۲. گلن ہند - کرشن جی 100
۳۳. چھ برہمن دھرم گیان 109
۳۴. قطعہ: بانسری ہند سانہ 110
۳۵. مہر بانی کرے کرشن 111



- ۵۶۔ بالہ پانس لگو تے از ۱۱۲۔ گلن ہند ترنم ۱۵۶
- ۵۷۔ قطعہ: یکدلی ہنس شہ ۱۱۶۔ بالہ کرشنن بام ڈرم اگلی ۱۵۸
- ۵۸۔ قطعہ: کنی یس نظر ۱۱۷۔ قطعہ: بے خبر پاپٹھو ۱۶۰
- ۵۹۔ بالہ پانس لاکھ جامے ۱۱۸۔ شعورس لاشعورس منز ۱۶۳
- ۶۰۔ قطعہ: وجود ک سر ۱۱۹۔ دلن گودین ودھرک ۱۶۲
- ۶۱۔ رادھا و نان چھ ناٹھس ۱۲۲۔ قطعہ: صحیح و تھڑھ ۱۶۳
- ۶۲۔ کس نام وایان ! ۱۲۴۔ یا منتھ یہ آدم دین ۱۶۴
- ۶۳۔ مہ چھا انکار ماتا ! ۱۲۸۔ کرشن جی ارجن ۱۶۵
- ۶۴۔ قطعہ: مہاسا کرشن ۱۳۷۔ قطعہ: بیاک دھرتی پیٹھ ۱۶۶
- ۶۵۔ ہے ! نے چھ گڑھان ۱۳۸۔ چھ بھگون ناسہ ترسن ۱۶۸
- ۶۶۔ قطعہ: کرشنہ موہری ۱۴۴۔ ستمکار و ستم کور ۱۶۹
- ۶۷۔ ہمیشہ و نے پرانہ و فوج ۱۴۷۔ کرشن کہانی ۱۷۰
- ۶۸۔ گیت: کرشن بانی ۱۴۶۔ ہرے کرشننا ! ۱۸۹
- ۶۹۔ قطعہ: رنس رنس کرشن اگر ۱۵۵۔ قطعہ: کرشنہ چھو کتھ رنگ ۹۲
- ۷۰۔ ..... کرکھ ۱۵۵۔ تقاربطہ اند: ۸۴

۱۔ پرو فیروز نظام الدین ۲۔ ڈاکٹر ملک موسیٰ ۳۔ علی محمد لنگر ۴۔ پرو فیروز حسن لال سپرو  
۵۔ شیوا چاریہ سوامی لکشمی جو گیت گنگا ۶۔ لالہ میلدارام نجیون گوکھ باغ







اگر چھ ظون سمر بھگوانہ ہندی گون  
 تریہ سپدی شود پنن دل ہیرے لون  
 چھ تھو سند ناو سمرن عین اکیر  
 بناوان کیمیا گر چھ کھولس سون

अगर ह्युयवन समर भगवान् संधि गोण  
 चय सपदी शोद पनुन दिल हेरि तय बोन  
 कु तम्य सुंद नाव समरुन एनि इकसीर  
 बनावान कौमियागर ह्युय खोटिस स्वन

مہ نیش آو۔ بارہا آو۔ بارہا آو  
 کورن میانیس ووندس منز پور ٹھہرو  
 تھمس کن اکھ قدم تل یاری لاگی  
 کبری اوئے دیا بھگون تر اندماو

म्य निश आव बारहा आव बारहा आव ।  
 कौरुन म्यानिस् वौन्दस मंज पुरु ठहरव ॥  
 तमिस कुन अख कदम तुल यार्य लागी ।  
 करिय औरय दया भगवान च अजमाव ॥



Swami Prabhupada

کرتا کرشنا

कृष्णा कृष्ण

Kṛṣṇa Kṛṣṇa

स्मरन् स्मरन्



"God attracts everything. The word Kṛṣṇa means  
'all-attractive.'

What, then, is wrong with addressing God as Kṛṣṇa?"



پیتا ماتا: کرشن۔ مائیتا سے  
 گورو سے گیان سے تے اتما سے  
 دلس شرو پیت۔ اچھن منز جائے تم سنز  
 محبت سے خلوص پز دیا سے

پیتا ماتا کृष्ण - माता पिता सुय  
 गुरु सुय ज्ञान सुय तय आत्मा सुय  
 दिलस ओप मुत ओढ़न मंज जाय तम्य संज  
 महोबत सुय खुलुसुच पंज दया सुय ॥



कृष्ण पंजय पांठय मखलुकन पनन मोल ।  
 करान हिस पोपु रिन्थ गथ, तस बरान लेल ॥



# KRISHNA



کرشن پیری پاٹھو محلو قن پین مول  
کران چھس پونپیرنی گتھ تم برن لول

This time, Nārada Muni saw that Lord Kṛṣṇa was engaged as an affectionate father petting His small children. (p. 245)



پیرز لونی دست و پا چم سریه کشتن  
 دگریم نقشه نام سریه کشتن  
 یمو کاتیا حسین پمپوشه سر کر  
 یمو ستو تخ سجاوم سریه کشتن  
 ۱- دست = اتم - ۲- پا = کھور - ۳- تخ = تخت

प्रजलवन्त्य दस्त पा छिम श्री कृष्णस  
 दिलुक्क्य इम नकशि हाविम श्रीकृष्णस  
 यिमव 'कत्वाह हसोन पंपोशि सर 'कत्थि  
 यिमव सूत्य तख सजाविम श्रीकृष्णस





His  
Divine  
Grace

श्रीकृष्ण मधुर तान छेड़ते हैं





## خوبصورت

● خوبصورت سانس اُگنی ژاوتے  
 گوپین دی تو کرشن سون آوتے  
 کرشنہ دیوٹھم ترھاپہ رُوس زن ماہتاب  
 شامہ ترھاین سریہ ہیو لون دروتے  
 میون دل اوس دابر رُوس دروازہ رُوس  
 اٹھو اندر پُرتھنے کورن ٹھہر اوتے  
 نوہر ستی اوند پوکھ گرگ کورنم نہال  
 من پرسن جھم۔ دل برن جھم چاوتے  
 ذکر پیچھ تے فکر پیچھ کرنم دیا  
 میانہ غفلت ہند ہیوتن ماناوتے  
 کرشنہ دیوٹھم تیوت رُڈی رُڈی سیر گوس  
 توتہ دو پیچھم بیچھنہ روزی گراوتے





खूब सूरत सानि आंगुन्य चाव तय ।  
गुपियन द'प्य तव कृष्ण सोन आव तय ॥

कृष्ण द्युठुम छाया रो'स जून माहताब ।  
श्याम छाया सिरिय जून नो'न द्राव तय ॥

म्योन दिल ओस दारि रो'स दरवाजु' रो'स ।  
अध्य अन्दर प्रछनय को'रुन ठहराव तय ॥

नूर सात्य ओ'न्द पोख गरुक कोरनम निहाल ।  
मन प्रसन्न छुम दिल बरान छुम चाव तय ॥

जिकिरि प्यठ तय फिकिरि प्यठ करनम दया ।  
म्यानि गफल'ज हुन्द ह्योतुन मा नाव तय ॥

कृष्ण द्युतथम त्यूत र'टय र'टय सेर गोस ।  
तोति दोषथम "युथ न रोज्यम आव तय" ॥



یوہ تھوڑم، اوہ کرشن گودنس  
 بس کنی کتھ : کرشنہ گارن پڑوتے  
 کرشنہ سمیت کر تہ چشمو دلشہن  
 یوہ نہ باور چھ ذرا آزماو تے  
 بالنسری کن کن تھوڑم بمنزل سوڑم  
 فاضلا ! سہ نلن مہہ گو صحراو تے

## شہکار

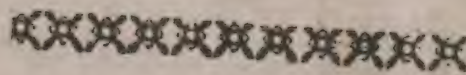
مہہ گو بیدار بخ از گوم بیدار مہخت  
 وچیم دیدو کرشن تس سیر یہ انہار  
 سہ گورمت و مہستہ گارن پوز صنم یو  
 دین زگتس پین اکھ حسن شہکار



योर् छोरुम ओर् कृष्णन मोरनस ।  
बस कुनी कथ—कृष्ण गाहन प्राव तय ॥

कृष्ण स्मरन करतु चक्षुम डेहिहन ।  
योद नु बावर छुय जरा भजमाव तय ॥

बांसुरी कुन कन थोवुम मजिल सुहम ।  
'फाजिला' भांगुन म्य गव सह्राव तय ॥



म्य गव बेदार बरुत भज गोस वेदार ।  
बुछुम दीदव ; बुछुम तस सिरिय भनहार,  
खुदा सबन कृष्ण गोर सोंच कंधि कंधि ।  
दितुन जगतस पनुन मल्ल हुसनि शाहकार ॥





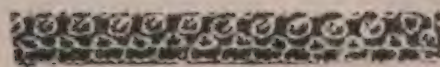
میرا یہ پیچہ کرشنہ دیا

پریمہ پتر میا سو گیا نہ کونیاں  
جلو ماوتھ بختہ بد کر تھن نہال  
بالہ کرشنا اس یہ پتر تھنہ دھتہ نہ گو کہ  
تی دتم چھے پنہ عظمہ ہند سوال



ژبه یاسنه کھوڑا تم سته دښکې بڼه  
 کھوړن تل وچېه مېه صحرا، کوټه ته ستر  
 مکانو ته زما کو حلقه ژړه وړي گام  
 چپېهنا کر شنه گویالا ژر یاور

ټی یامت خولجیام سټی دښنکی بڼه .  
 خورن تل وڅی مېه سهره ، کوټه ته ستر  
 مکانو ته زما کو حلقه ژړه وړي گام  
 چپېهنا کر شنه گویالا ژر یاور ॥



میراڼی پټ کړی دیا

پرمه ټی میرا ټی جانوچ کونې میسال ،  
 جلاوټی ها ویشی دیا ټی کټی نیتال .  
 والو کړی تاسی پیلنې دیش ټی گام  
 ټی دیتاسی پټی پټی ټی دیتاسی ټی





भक्तिमती मीरापर कृपा

چانه پریمک زونک نیمس لوگ سورگو  
 سریه من پر وون زندن هند نورگو  
 لن ترانی پرانه سیمچ ریت اس  
 قوه به ستو میرا به انگ انگ طورگو

वानि प्रेयमुक जोगं येमिस-लोग मूर गव,  
 सिरियि मन प्रोवुन जुवन हुन्द तूर गव ।  
 लन तरानी प्रानि समयिच रीत आस ,  
 कोर्वु सत्य 'मीरायि' अंग अंग तूर गव ॥





میون دل اوس دالہ روس دروازہ روس  
 اتھو اندر پرندہ ہننے کوہن سٹھہراوتے

میان دل اوس دالہ روس دروازہ روس  
 اٹھو اندر پرندہ ہننے کوہن سٹھہراوتے ॥



कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो माम दो नैनो मत खाइयो, पिथा

सत सत =

मिलन का आस =

Love at first Sight

خاند

شبیہ کرشن وچھم دھرتی بنیل گو  
اچھن تہندس شبیس ستی میل گو  
وجودک ویر تھووم بس آیتن تسو  
کرشن پزووم مہ کیت خاند مرھیل گو

(میل) ۲۔ دھرتی زمین  
۳۔ مرھیل = سفلی  
۴۔ پرون چھل کن



۱۔ شبیہ = فوٹو  
۳۔ ویر = جایلاو  
۵۔ آیتن = حاضر

शबीह कृष्णुन वृद्धुम धरती वृन्धुल गोव,  
अद्वन तंहदिस शबीहस सत्य म्युल गव ।  
वृन्दुक व्युच योवुम बस आयितन तंस्य,  
कृष्ण प्रोवुम म्य वयत खांदर मंद्युल गव ॥

कागा! सब तन खाइयो - चुन चुन खाइयो माम दो नैनो मत खाइयो, पिथा





شر کرڻ پوڙا پڙيڪ اڻهاري  
 کڙشڻ بھگتن شر لہ منتر تامل کار پي  
 زائد ايتھڻ کڙشڻ دڙشڻ ديوان  
 دل کڙڻ موسم ديئي اوهاري

شری کرڻ پوڙا—پڙيڪ اڻهاري یو،  
 کڙشڻ بھگتن شر لہ منتر تامل کار یو.  
 زائد ! ییڻیڻی کڙشڻ دڙشڻ دیوان،  
 دل کڙڻ موسم دیئی موڙار یو ॥





۱۰  
 یمنیس پرش زخم پیو و پھر واپس  
 رین کن کرشنه و تھووت لکانس  
 چھے پر اب گنیر اکروہ سنر کل  
 بنی پمپوشہ سرانگ انگ تریہ پانس

في الثاني

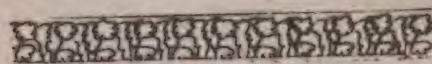
ص: ۱۰۰ - سر: جھیل

مساوات پر وہ یوں ہے افضل کہ جسے ہر وقت ایک نیک دوست ہے اگر کجاہ نیک



پرن گیتا تہ کرشنن واس سیدھ  
 موذن گیتا تہ کرشنن مائے پراو کہ  
 کری میل کرشنن لالستی سمن  
 سمر گیتا سمر کرشنن مہ کڈ تھا کہ

پرن گیتا تہ کرشنن واس سیدھ  
 موذن گیتا تہ کرشنن مائے پراو کہ  
 کری میل کرشنن لالستی سمن  
 سمر گیتا سمر کرشنن مہ کڈ تھا کہ



یےمیس پوروس جنم پیاو فوچ پانس،  
 رتن کونک کونک وٹ بوت لامکانس،  
 لوی پالبد گنیر مکرر سنج کل،  
 بنی پپیشی سر مگ مگ وے پانس॥

نوٹ -

ون = گڈ، مشکیل







भक्त रसखानपर कृपा

۱۔ مہربانی  
 رشتہ خان گورنکھ کر تھس دیا  
 لولہ والین کتر دیا کینہ کم چھیا  
 ناپہ کارہ چھس۔ مگر چون داس چھس  
 کرتہ داسس پیچہ تہ از مہر چنگا



یتیمس پیچہ کیشنہ مہراجن دیا کر  
 بہ آسانی تمس ناو ساگرس تر  
 حیاتی تنہ پیچہ جیون نہ حیات  
 سہ وانس زندہ رود پہاڑن عمر شد

यमिस प्यठ कण मदात्तन हया 'कर  
 ब आसानो तमिस नाव सागरस 'तर  
 हयातो तिहिजि प्यठ जीवन ति ह'रान  
 सु वांमन जिद रुद प्रवन उमर चर

रसखानस टोठयव दया

रस खानन गोरनख क'रथस दया,  
 लाल'वाल्यान किच दया कैह कम छया ।  
 नावु'कारा छुस, मगर चोन दास छुस,  
 करत दासस प्यठति अज म्यहरुच निगाह ॥





भक्त बिल्वमंगलपर कृपा

گیالین بلو منگل کو رہ یہ خوشحال  
 تمس اوس کرشنہ سمرن حالتے قال  
 اوے کرنو نس منزل سوا گت  
 چھ کوتاہ رت دیا لو کرشنہ گو پال



یمو لہرو و پزیرک قصر شاہی  
 تمو کر پانیہ سے آخر تباہی  
 کرشن مہراج ووتھ ادھار کورناہ  
 چھ کوتاہ جان بھگون یا الہی!

یمو لہرو و پزیرک قصر شاہی،  
 تمو کر پانیہ سے آخر تباہی،  
 کرشن مہراج ووتھ ادھار کورناہ،  
 چھ کوتاہ جان بھگون یا الہی!

गोपालन बिल व मंगल कुरुय खुशहाल,  
 तमिस ओस कृष्ण स्मरण हाल तय काल।  
 अवय करना व्यनस मैजिल स्वागत,  
 छु कोताह रुत, दयालु कृष्ण गोपाल ॥





फलवालीपर कृपा

میوہ واجیندی بخت بد اکھ نازمین  
 کرشنہ سمین اوس تس پوراتہ دین  
 پرتھ میوس منز در پتھ گو تس کرشن رنگ  
 ہووئس محو موکھ پنن۔ کوتاہ چین



چھ کردارک تھرز ویو کیرشہ بھگتس  
 تمس گیاچ تپش پانس اندر مس  
 چھ لوگون تس نشے یتر دور یتر دور  
 تھوان بھگون پرش پتھ ستی پانس

छु किरदारक थजर व्योद कृष्ण भक्तस,  
 तमिस ज्ञानुच्य तपिश पानस अन्दर मस,  
 छि अवगुण तस निशे यंच दूर यंच दूर,  
 थवान भगवन पुरुष युथ सूत्य पानस ॥

मेव वाज्यन्य भक्त बड अख नाजनीन,  
 कृष्ण स्मरण ओस तस पूजा तु दीन ।  
 प्रथ मेवस मंज द्रांठ्य गव तस कृष्ण रंग,  
 होवनस तम्य मुख पनुन कोता हसीन ॥





سَوْر دَاسَسْ اَکَرِ شَنۡہِ ! بَخِشۡ تَحۡہِ گِیَانِ دِہِیَا  
 تَشۡنۡہِ ہِرۡوَنِ گُو سۡہِ عَرۡفَانِ بَاکَرِ اَنۡہِ  
 کِیَاہِ گُڑۡہِی کَمۡ یُوۡدۡ مِہِ تے سَاکَرِ کَرۡکَہ  
 لَکَہ مِہِ مَنۡزِی بِہِ تَہِ اَسۡہِ ہِنِ تَارۡسِ تَرۡنِ



کرکھ یوڈ کرشنہ سودا کن پنن دل  
 مگر سودا پنن دوون منرچھ مشکل  
 کرنی ما اور بھگون بخت بیدار  
 ملے کر کرشنہ بھگتی بن تر فاضل

करख येद कृष्ण सोदा 'कुन पनुन दिल,  
 मगर सोदा बनून दुन मंज छु मुशकिल।  
 करो मा ओर भगवन भक्त बेदार,  
 मुलय कर कृष्ण भक्ती बन च फाजिल ॥

सूरदासम आनुथ गाथ

सूरदास कृष्ण वनुथ ज्ञान ध्यान,  
 तइनु हृदयन गो मु हरफान बांगरान।  
 क्याह गछी कम योद म्यते मागर करख।  
 नुख म्य मंज्य आसहन तारस तरान ॥





श्रीकृष्ण-चरण

کرشنہ! چوئے نقشہ پاچھم شوڑ من  
 چھس اوئے کنو دین و دھرم و تھ سو دن  
 پی کران لچھ منزلن ہنر و تھ کرم  
 چھیکرس چھس پانہ از منزل بن

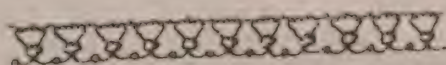
کیا خدا ہے یا اس کا جواب لیتا دیتی ہے۔ خدا ہے، بلکہ خدا ہی ہے۔ دوسرے



شری کرشنی چرن سادھن کلس پیچہ  
 مگر یارس چھلان پنینو اتھو کھور  
 یہ کرنس منز تمبس حاصل پرستنا  
 یہ کو پریمک خلوصک آخری حد

نوٹ :- یاد : سدا جیس کن اشار پرستنا : خستی بمرست ۔

श्रीकृष्णन्यचरण सादन, कलस प्यठ,  
 मगर यारस छलान पनन्यव मयव खुर।  
 यि करनस मंज तमिस हांसिल प्रसन्नता,  
 यि गव प्रेममुक, खलमुक मोहरो हृद ॥



कृष्ण! चोनुध नकशि' पा छुम श्रुच मन,  
 छुस भवय किन्य दोन' धर्मच वय स्वरन।  
 यी करान लछ मैजिलन हंज वय क'हुंम,  
 छेकरस छस पानु अज मैजिल बनन ॥





श्रीराधिका-चरण

بادعا چھ آمبر کرشنہ و تو دالہ اُن زان  
 پرتھ منزل بس پیچہ زانہ و نین باگہ دتن گیان  
 محروم پُرشن بانی دین دیت نہ بخش دل  
 تم گاتہ نش یثہ دور پیمتو اُتیہ پریشان



# पम्पोशियाद

دَالِ شَوْبِيَا مِيُونِ دِلِ مَوْرَلِي دَرَس  
 بَسِ يُونِ پَمْپُوشِ پَهُولِ مِيَانِسِ سَرَس  
 دِلِ چِه دِلِ پَمْپُوشِ يَادُنِ هُنْدِ عَكْس  
 دَالِ كُزُرُوتِ كِهَوَرِنِ مِيُوٹِ كَرَس

पंपोशि पाद

डालि शब्ब्या म्योन दिल मुरलीदरस,  
 बस योहय पम्पोश फोल म्यानिस् सरस ।  
 दिल लु दिल पम्पोशि पादन हुन्द अक'स,  
 डाल्य गुजराविथ खोरन म्यूठा करस ॥

राधा छि आमुच कृष्ण वतव, डाल अग्निन जान  
 प्रथ मैजिलस प्यठ जानुबुन्य न बागि दितुन जान  
 महरूम पुरुषण वान, दयन छतु न बखशुन दिल,  
 तिम गाशिनिश यच दूर प्यमति अग्न्य त परेशान



## گیشوم



گیشیمس بالکس نش ندون شران  
 پرمی چھا! حور چھا! اوتار انسان  
 اچھن ورنمل، ڈیکس زندرم موکھس گہ  
 یہ وچھتے کامہ دیوس ہوش راوان

۱۶۔ جو باطل ہے موجود ہوتا نہیں ہے جو حق ہے نابود ہوتا نہیں ہے



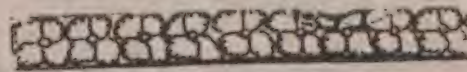
अनन्त इमे देहा नित्यसोकाः शरीरिणः ।

अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्यथा भावत ॥ १८ ॥

विनाशमयस्यसि न कश्चिदपि ॥ १७ ॥

सरी कश्ना ! मङ्क वित् बावफा दिम  
पिता माता छुहम प्रमच्य दया दिम  
यमन ध्यान्यन गुणन फिर प्रमृतेक सप्त  
अमी सूत्य जन्म फुयर कासुम वका दिम

श्री कृष्ण ! मनुक व्युच बावफा दिम  
पिता माता छुहम प्रमच्य दया दिम  
यमन ध्यान्यन गुणन फिर प्रमृतेक सप्त  
अमी सूत्य जन्म फुयर कासुम वका दिम



ग्येशेमिस बालकस निश जून शरमान  
परो छा ! हूर छा ! प्रवतार इन्सान ।  
प्रछन वुजमल, हयकस चन्द्रम मुखस गाह  
यि वुछयय कामदीवस होश रावान ॥

उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तात्त्वदर्शिभिः ॥ १६ ॥  
अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।





سُمّی لوی گوہیو شاپارے ترو  
 بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای  
 پوشہ پوزا کرتھ لولہ شہا پزو - بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای  
 بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای



वदविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् ।

कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥

अज्ञो नित्यः आश्रतोऽयं पुराणा न हन्यते हन्यमानो अतीरे ॥२०॥

न जायते म्रियते वा कदाचि-  
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।

रूप म्योन ओस मन हैमी सूत्य नार जन,  
जमहरीरुख्य पाठ्य शेहलोव सोचनन ।  
तनहरास्त-मन कुज्ञानुच चेनुवन,  
चेनुवन ज्ञानुच दिक्षुम मोरलीधरन ॥

रूप म्योन ओस मन हैमी सूत्य नार जन,  
जमहरीरुख्य पाठ्य शेहलोव सोचनन ।  
तनहरास्त-मन कुज्ञानुच चेनुवन,  
चेनुवन ज्ञानुच दिक्षुम मोरलीधरन ॥

XXXXXXXXXXXX

(वनवुन

सम्यतवी गूपियब शालुमार हय तरव,  
बालकृष्णस करव पोशि पूजा ।  
पोशि पूजा करिथ लोलु शब्दाह परव  
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।



گوکس ساری ہے زینہ زولہ کرد۔ جاپہ جاپہ ہے کروڑ نذر سال  
پریمہ سریمہ بانسری لولہ تھان برو  
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

الفتح مورتھ پتھ شریس گرد۔ لولہ والبن دپو پتھ برن مے  
ماپہ ہوت اکھ قدم تل تر وچھ مامرو  
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

مالہ لوگ پر پتس پتھ بہن مازرو۔ سارے دل تہ شل انچھ لوشان  
گبونہ لچ آپہ جھو نہرنہ لکیم سرو  
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

حسنہ اکاشہ کنی لعل و گوہر بیو۔ تار کن فاضلا شولہ بہر گاش  
دیوین گوتھ وٹن پانہ از تر او رو  
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای



अच्छेद्योऽयमदाहोऽयमवलेद्योऽशेष एव च ।

नित्यः सर्वगतः स्थापुर्चलोऽयं सनातनः ॥

गुकुलस सायंसय जित्तिनिजुलाह करव,  
जयि जायि हय करव चन्दरमस साज ।  
प्रेयमस्नेह बांसुरी लोलु थालन वरव,  
बाल कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

उल्फतुच मूरथा यथ शरीरस गरव,  
लोलुवात्यन दमिव यथ बरिव माय ।  
मायि हैत अख कदम तुल च वुछ मा मरव,  
बाल कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

मेलु लोग परबतस पथ व्युहुन मा जरव,  
सारिनय दिल तु शिल अज छि तोशन ।  
ग्यवनि लज्य आबु जुय नचनि लग्य यिम सरव,  
बाल कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

हुसनु आकाशि किन्य लालु गोहर जरव,  
तारुकन 'फाजिला' शोलि प्रागाश ।  
दीवियन गेछु बनून पानु अज त्रावि रव,  
बाल कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

न चूनं कहेदयन्त्यापो न शोषयति साक्षतः ॥

॥२२॥

न्यन्यानि संयाति नवानि देही जीर्णा-  
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय  
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।





جے جے!

منس منز گرزان بانسری ہنر مود لے  
 یہ لے بالہ کرشنا چھ پیانی تہ جے جے  
 پزیک آلوہ گو و ن منز پیا پے  
 یہ چسانی چھ بد مہرانی تہ جے جے  
 دو دک شریہ تہ امریت چھ کھاسن بران تہ  
 چھ اتھ سلبیل روانی تہ جے جے  
 مو کھسن پٹھ گلاب پانہ پیریمی تہ چھ جے  
 نہ کہنہ چھ بربرنہ ثانی تہ جے جے  
 دینی کم گڑھتھ پانہ منزل گڑھان طے  
 پچے گون کران پاس بانی تہ جے جے

اس مہاراج کیسویں میں اب کیسا کہوں کہ اتار دین میں برے میں شکوں



येषामर्थं काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च  
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च

किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा

## जय जय

मनस मंज प्रेजान बांसुरी हुंज मोदुर लय,  
यि लय बाल कृष्णा छे चा'नी चे जय जय।

पङ्गुक आलवाह गव वनन मंज पयापय,  
यि चा'नी छे ब'ड मेहरबा'नी चे जय जय॥

दो'दुक स्नेह त् अमृत छे खास्यन बरान नय,  
छे अथ सलसबोल'च' रवा'नी चे जय जय॥

मोखस प्यठ गोलाब पान् प्रेमी चे छुय दय,  
न कांह छुय बराबर न सा'नी' चे जय जय।

दुयी कम गंछिय पान् मंजिल गझान तय,  
यिमय गुण' करान पासबा'नी' चे जय जय॥

नोट : 1. सोरगुकसर 2. चे ह्युब 3. सिफत  
4. रा'छ

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।

च किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा  
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥





راد صایہ و ذلت شایہ گلشن آرایہ کوشن جی  
 درشن چھ ماوان پانہ کمیو ترایہ کوشن جی  
 تھنر نقشبہ بنو بنو گاشہ بخش غار برهن گو  
 لولس تہ ہر دس سریرہ چھ سرایہ کوشن جی  
 یتھ جایہ لوکن مایہ بوڑت شرہیم تہ سمت نمود  
 صالچ چھ ویان بانسری تھ جایہ کوشن جی  
 یتھ کرایہ آتش باد تر تر تریشہ بتین لوگ  
 تھ کرایہ گنگا سپہل سایہ کوشن جی  
 فاضل اچھ تس تس باگہ تھنر لانہ سبزر تس  
 یس پریمہ سانے تیر نظر لایہ کوشن جی

۳۴۔ بیکر بھی ہیں داد سے بھی استاد بھی، لیسر بھی ہیں اور ان کی اولاد بھی۔



निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्नाज्जनार्दन ।

पापमेवाश्रयेत् सान्द्रत्वेनानातवायिनः ॥ ३६ ॥



राधायि वनिव शामु गटन छायि कृष्ण जी,  
दर्शुन छि दिवान पानु कम्पू त्रायि कृष्ण जी ॥

थन्य नक्षशि वनिथ गाशि बुधिस गाज् ब्रमन गव,  
लोलस तु हृदयस मिरियि छु सरमायि कृष्ण जी ॥

यथ जायि लूकन मायिबेरुत स्नेह तु समुत रबोय  
मुलहुच छे वायान बांसुरी तथ्य जायि कृष्ण जी ॥

यथ क्रायि भातश नारु तवर त्रेशि हत्यन लेग,  
तथ क्रायि गंगा अयि शुहुल सायि कृष्ण जी ॥

“फाजिल” छु बखतस बागि थजर लानि स्यजर  
तस,  
यस प्रेमसानुय तीरि नजर लायि कृष्ण जी ॥

नोट -

त्रायि = नहजि २ गाज - पोडर

३ व्युच - सरमायि

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।

मातुलाः भ्रातृपौत्राः श्यालाः संबन्धिनस्तथा ॥ एतान् हन्तुमिच्छामि मतोऽपि मधुसूदन ।





لے (مورلی ہنزے)

یام شہدیت کرشنہ اوتان تے  
جے ہری کوڑا لکے سمسارن دے  
لڈتہ زانتھ یا نہ زانتھ گم بیگم  
کل پشی ہے تھو تھ کن تھ لے



कथं न श्रेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् ।

कुलशयकृतं दोषं प्रपश्यन्निर्जनादर्न ॥३९॥

کرتنه مودلی پرتنه زمانس منزوزان  
 یم چچه بوزان تم چچه باهزی هوو بنان  
 یا الهی یوت تاثیر چچه شهس  
 تفرنگ ول حل چچه اقواسن گرشان

कृष्ण मुरली प्रथ जमानस मंज वजान,  
 यिम छि बोजान तिम छि बारुन्य हिक्क बनान।  
 या इलाही ! यूत तासीर छा सहस।  
 तफरिक्क वल हल छु मकवामन गछान ॥

याम शह छुत कृष्ण अवतारन नये  
 “जय हरो” कोर जगत संसारन दये ।  
 अज ति जानिय या नु जानिय गहवेगह  
 “कुल्लुशयुनहय” यविथ कन तय लये ॥

- नोठ । 1 गहवेगह— कुनि कुनि विजि  
 2 ‘कुल्लुशयुनय’— यि छेछाह जिन्दह छु  
 3 लये— पावाञ्च

तस्मान्नाहं वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।

लोभापहतचेतसः ॥ पश्यन्ति न पश्यन्ते गद्यन्ते ॥ स्वजनं हि कथं हत्वा मुखिनः स्याम माधव ॥



# تلا بانسری تل!

گپ لا! پھولن گل۔ ذرا بانسری تل  
 تریہ پیارا چھ بلبل۔ ذرا بانسری تل!

تر پریمک تہ لوک مجسم مجسم  
 فد اچھی تریہ کم کم۔ ذرا بانسری تل!

نبس پیٹھ سلی کوڑ تمنا تارو  
 قدم تھو قدم تھو۔ ذرا بانسری تل!

تریہ پرتو مہ تر و تھ مگر تھ تھ  
 گجس چانہ مائے۔ ذرا بانسری تل!

۱۔ ذرا = پہنہ ۲۔ نب = آسمان ۳۔ تمنا = شوق ۴۔ پرتو = جلو

تم قید فنا گر کوئی ہو گیتا قدیمی وہ دھرم اس کا سب کھو گیا



सकरो

नरकायैव

कुलमानां

कुलस्य

च ।

पतन्ति पितरो

क्षेपां

तुष्टापिण्डोदकक्रियाः ॥

॥४१॥ : १४१॥

## बाँसुरी तुल

गुपाला ! कोलन गुल, जरा बाँसुरी तुल ,  
 वै प्रारान छि बुलबुल, जरा बाँसुरी तुल ।  
 च प्रेयमुक त लोलुक मुञ्जसम मुञ्जसम ,  
 किदां छी वै कम कम, जरा बाँसुरी तुल ।  
 नवस प्यठ सुली कोर तमन्ना सितारी ,  
 कदम यव कदम यव, जरा बाँसुरी तुल ।  
 वै परतव न्य त्रोकुय मगर छाया छायै ,  
 गजिस चानि माये, जरा बाँसुरी तुल ॥

नोट :— 1. कोरबान 2. :— यज्ञा 3.— जसव

कुलधर्माः सनातनाः ।  
 प्रदुष्यन्ति कुलधर्मः ।  
 धर्मो नष्टे कुलं कुलधर्मोऽभिभवत्युत ॥४०॥

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।



گُلن منز ہر گویا تو گاشرو وُل  
اچھن میل تو مل، ذرا بانسری تل

پمن گو پین منز تریہ موہری دتھ شہ  
تمو کوڈ دی لہ، ذرا بانسری تل

ثر بالک او ستھا تریہ شو بھاچھ عظمہ  
ثر لگتھ حقیقہ، ذرا بانسری تل

کشش ہش کشش چھے تریہ اتھ بالہ پائس  
ثر مرکزہ پائس، ذرا بانسری تل

دماہ سائہ بہیتو امہ تھو و از لو تھہ دل  
چھ فاضل تریہ مایل، ذرا بانسری تل

۱۔ شہ: چھو کھ ۲۔ لہ: لہ ۳۔ لہ: لہ ۴۔ مرکزہ: اوہو کھ ۵۔ لوتھہ: لوتھہ دو تھہ

۳۔ قبیلوں کو غارت کرین جو بشر، ہون ورن ان کے پاپوں سے زبردہ



अहं नव महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् । यद्राज्यमुत्तलमनहनुं सक्नुवन्महामुनिः ॥

॥४४॥ मन्त्रोक्तः ॥

गटन मंज हुरघर गव यितो गाशरो वल्य,  
अ'छन मेलतो म'ल्य, ज़रा बांसुरी तुल।  
यिमेन गूपियन मंज चै मोरली वितुथ शह,  
तिमव कोर दुयो लह', ज़रा बांसुरी तुल।  
चु' बालक अवस्था, चै शोवा छय अजमथ'  
चु जगत'च हकीकत, ज़रा बांसुरी तुल।  
क'शिश हिश क'शिश छय चै अथ बाल पानस,  
चु मरकज जहानस, ज़रा बांसुरी तुल।  
दमाह सानि वैहतो, मै थोवमय लिविय दिल,  
छु 'फाजिल' चै मायिल, ज़रा बांसुरी तुल।

नोट :- 1. इनकार 2. बजर

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः ।

A3/1



# منزل پاتھ



آلہ - نابد - زبیر - بادم چھکیو  
لولہ بُرتیو کرشنہ لالو از ولو  
درشنک و آسن مہ روم آرزو  
لولہ بُرتیو کرشنہ لالو از ولو

ہی تہیمبرزل تہ جافری تے گلاب  
یاسمن پیمپوش وری کیمو آفتاب  
ہم دین کری یاد ہم گل لاگیو  
لولہ بُرتیو کرشنہ لالو از ولو

دوسرا دیوائے

سین جے نے کہا

ایجو آجین کا دیکھا یہ رنج و ملال کی غم و سوگند کی دل کھینچ طبیعت نہال



कृष्णं मा सा गमः पार्थ नैतत्तयुपपद्यते ।  
शुद्धं हृदयदीर्घं त्वक्चोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥



माल, नाबद, चेर, बादाम, छिकयो  
लोलु बर्यंत्यो कृष्ण लालो अज बुलो ।  
दर्शनुक वांसन मेरुम आरिजो,  
लोलु बर्यंत्यो कृष्ण लालो अज बुलो ॥

हो तु यम्बरजल तु जाफर्य तय गुलाब,  
योसमन, पम्पोश, विरिकेभ्य आफताब,  
यिम दयन केयं पादु गुल तिम लागयो,  
लोलु बर्यंत्यो कृष्ण लालो अज बुलो ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।

विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥  
विषमे समुपस्थितम्  
कृतस्त्वा कः कमलमिदं



میانہ وارن سپنہ کین پنجرن اندر  
اکھ دین کو پھر چھ پھٹم زن کھنڈر  
چانہ باپتہ جھم لو تھ تھو مشربو  
لولہ برتو کر شنبہ لالو از ولو

سریہ موکھ ٹنڈم ڈیکس تارکھ جرتھ  
ہرنہ چشمن زن ترہ چھ امریت برتھ  
دل چھو لیم گاہے ترہ ہنتم روہو  
لولہ برتو کر شنبہ لالو از ولو

چانہ ویرے گو کلک منزل ترھنڈم  
وژدیم جمنایہ بھو بھو پے تھوم  
در اصل چھم لیس مہ چوئے جھستو  
لولہ برتو کر شنبہ لالو از ولو

۲۳۳  
ارجن کا جواب



न चैतद्विद्यः कतरओ गरीयो  
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ।

॥ ५ ॥ लाङ्केश्वरकव्येनामोऽयं  
कव्येन कवि प्रियमाफुहालुः

म्यानि वारान सोनुस्यन पंजरन मन्दर,  
अख दिनुच कठरुछि फुटमुच जन खण्डर।  
चानि बापथ छम लिबिथ थवमच मे-दो,  
लोल बर्यत्यो कृष्ण लालो अज वुलो ॥

हि महानुभावान्  
गुरुनहत्वा श्रेयो भोक्तुं संशयमपीह लोके ।



सिरियि मुख चन्दरम ड्यकस तारख जेरिथ,  
हरण चशमन जन चै छुय अमथ बेरिथ।  
दिल फोत्यम गाहे च बिहतम रोबरो,  
लोल बर्यत्यो कृष्ण लालो अज वुलो ॥



चानि बेरे गूकलवय मंजिल छडिम  
बन्य दितिम जमनायि बंठय २ पय २ पविम  
दर असल छुम बस मि च्योनुय जुस्तजो,  
लोल बर्यत्यो कृष्ण लालो अज वुलो ॥

नोट— १ आबे हयात २ तलाश ।

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन ।

यानेव हत्वा न जिजीविषाम-  
स्तेष्वस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥

इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजाहर्षारिसूदन ॥ ४ ॥





## سالہ تہو!

کرشنہ گوپالہ! دماہ سالہ تہو      سریرہ میتالہ دماہ سالہ تہو  
 میانہ امار! چھ مشکل بے رنجی      ورنی کووٹالہ دماہ سالہ تہو  
 انتظار ہی بے قراری پر لبس      رہ کس کھالہ دماہ سالہ تہو  
 بال سری تل! زن و سن ہتھ سلسیل      اسی ہرو پیالہ دماہ سالہ تہو  
 فاضلن تھو و من سجاو تھ بے شکیت  
 اندسلی کالہ دماہ سالہ تہو

طبیعت ہے کمزور دل نہ رہے یہ اچھن ہے اب کیا مراد دھر ہے



एवमुक्त्वा

दुषीकेशं गुडाकेशः

सजय उवाच

परंतप ।

न योऽस्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥

॥ ७ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

## साल् यितो

कृष्ण' गूपाल' दमा साल यितो,  
सिर्य मीसाल् दमाह साल् यितो ।

ग्यानि अमारु ! छे मुशकिल बेरुखी,  
वोन्य कवो चाल्, दमाह साल् यितो ।

इन्तिजारी, बेकरारी प्रालबस,  
राह कमिम खाल्, दमाह साल् यितो ।

बांसुरी तुल जन वसन हथ सलसंबील,  
अस्य बरव प्याल्, दमाह साल् यितो ।

“फाजिलन” थौव मन सजाविय बस वे  
क्युत  
अज सुलो काल्, दमाह साल् यितो ।

नोट : 1. नसाव, तकदीर, 2. बर्गुक सर

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः

पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ।

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्यादु

यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे

प्राप्तं । यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे ॥ ७ ॥





مہ کن وچھ

را دھاپہ بُری پیالہ تریہ گوپالہ مہ کن وچھ!  
 از کالہ یزیم سالہ دماہ لالہ مہ کن وچھ!  
 مورلی دِ کئے ششہ تہ گلن پھیر پنن رنگ  
 بلبیل تریہ کرن یوسمنن مالہ مہ کن وچھ!  
 تن تھنن تہ بٹھس جلیو، اچھن سیچر ڈیکس گہ  
 زن بریہ تریہ موٹومہ کر تھ مالہ مہ کن وچھ!

۱۔ بھوک

۲۔ گاش

۳۔ دایہ علیہ

۱۰۔ ادھر د فوج تھی اولہ ادھر فوج تھی دل الدین کا اولہ علم کی اک مروج تھی



राधाधनमनादांशुना नानुशोचति पण्डिताः ॥



श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्यशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।  
सेनयोरुभयोर्मध्ये विधीदन्तमिदं वचः ॥१०॥

## में कुन बुछ

राधायि बरी प्वालु' चे' गूपालु' में कुन बुछ  
अज कालु यिद्वयम सालु' दमाह लालु' में कुन बुछ  
मोरली दि कुनुय शह त् गुलन फेरि पनुन रंग  
बुलबुल चे करन यासमनन मालु' में कुन बुछ  
तन थन्य त् बुधिस जलवु', अछन सेहर ड्यकसे गाह  
जन सिरियि चे मोसुम् करिथ हालु' में कुन बुछ

नोट : 1. गाश 2. थालव-थालव (थाल सुत्य)

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसान्निव भारत ।

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।  
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥१२॥



گو کل بہ نہمتھ شامہ گن ترھایہ وندے زو  
 بادم تہ خضر، آکہ چھکے تھا لہ مہ کن وچھ!  
 از چانہ کلے ٹھانہ وڈھے ملکہ بڑتھ چھم  
 دامہ ڈر اگر چھاکھ تہ بہ سنبھالہ مہ کن وچھ!  
 دروازہ تھا فے وٹھو تہ بڑہ پرتھ جایہ کرتے زول  
 بونجہ جگہ ہالہ شمع زلہ مہ کن وچھ!  
 یو دلا لہ بکری دور تہ سنے گیلہ مہ وچھ وچھ  
 کنہہ وایہ کرن چھمنہ رتھ نالہ مہ کن وچھ!  
 چھ وگنہ گنڈتھ ددی تہ بڑہ گوپی چھ نتر لخوان  
 نہ نہ ہرنہ کھیلے سنز نہ وڈتھ تھا لہ مہ کن وچھ!  
 کم مایہ چھ فاضل تہ سری کرشنہ نظر تل  
 آسن تہ لہسن بہ بڑہ پتھ گالہ مہ کن وچھ!

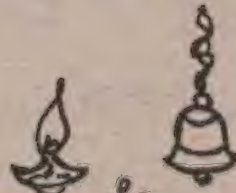
۱۔ زول = پیراغاں ۲۔ بکری دور = گستاخ۔

۱۲۔ کہتے روح جسے بغیر بغیر، لڑا لپن جوانی بڑھاپے کی سرکوبی



न हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ । समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१५॥

गोकुल बं निमय श्याम गटन छावि वंदय जुव  
बादम त् ख'जर आल' छकप थाल' में कुन बुछ  
अज चानि कले ठाम् वछय मलरि बरिथ छम  
बामाह च अजर चख त् बं सम्बाल' में कुन बुछ  
दरवाजु थवय व'ध्य त् चे' हर जायि करय जल  
बो खूनि जिगर हार' शमह जाल' में कुन बुछ  
योद लागि बुकुर्य दोर त् समय गेलि में बुछ-बुछ  
कांह वायि कहन छुमन् रटथ नाल' में कुन बुछ  
छय विगनि गंडिथ दयं त् चे' गूपी छि गजल खां  
जांह हरन खेलिस मंज न् बिचथ छाल' में कुन बुछ  
कम मायि छु "फाजिल" त् श्री कृष्ण' नजर तुल  
आसुन त् न आसुन बं चे' पथ गाल' में कुन बुछ



देहिनोऽसिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।  
तथा देहान्तराप्तिर्यथैव न मुह्यति ॥१६॥



گلا لہ!

گلا لا! ذرا بیل! گپا لہو دیے چھ  
جگر چھیل، جگر چھیل! گپا لہو دیے چھ!

تہ چھ داغ سپنس، مہ دھ چھم دلس چھم  
یہ مشکل تہ کر حل! گپا لہو دیے چھ!

وہ نرج ناہ، بڑیہ ہش تہ لا لکھ قبا چھم  
شہج تہ ادرہ ول! گپا لہو دیے چھ!

تہ بڑیہ مسولن منزا، تہ پاوا سمیت کر  
گنبر الفنج کل! گپا لہو دیے چھ!

گپا لا! یمن سپنہ ددی آخ لہو دھ  
تک لکھ مل، تک لکھ مل! گپا لہو دیے چھ!



## गुलाला !

गुलाला ! जरा बल, गुपालन्य द्रुय छय  
जिगर छल, जिगर छल, गुपालन्य द्रुय छय ।

चै छुय दाग मोनस म्य दुख छुप, दिलस छुम  
यि मुशकिल चू कर हल, गुपालन्य द्रुय छय ।

वोजूज नारु ब्रैह हिश चू लागिथ कबा छुल,  
शिहिज चादराह बल, गुपालन्य द्रुय छय ।

चू बेह मसवलन मंज, चू हांसिल समुत कर  
गन्तर उल्फतुच कल, गुपालन्य द्रुय छय ।

गुलाला ! यिमन सोनु द'द्य आख रुदिल,  
तुलुख मल, तुलुख मल, गुपालन्य द्रुय छय ।



अन्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।

जातस्य हि भ्रवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।  
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि । २७।

वयमपि त्वं महाबाहो नैव शोचितुमर्हसि । २६।

तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि । २५।  
अथ चैनं नित्यज्जातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।





۱۔ ٹھنڈی ترور پیس گور کھیٹھ کر شنه گپالا  
۲۔ تس کھرنہ دیکس درہ تہ دلس گوہ ملالا  
۳۔ مانایہ ترہ موضوہ وونے لفظ مکھن چور  
۴۔ اچھ بیٹھنے لگی بالکا اچھکھ حسن کمالا

۱- تختی = میگویند ۲- گوی = گویری بازی ۳- دره کجی = سلاله گزین ۴- چور = چور

۵۔ اچھ لکھی = جیم بد لکھی۔ ۶۔ جین کمال = Beauty Incarnate

۴۷۔ جس نے اپنے عقل کے یوگ کے کا حال سن بہت اسیست میں جس سے کہہ لوں گے کہ



कर्मान् बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।

अन्मवन्मविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥

अंदस प्यठ तिमय लुख मे वासिल गकान  
यिमन हुजं इबादत-खलूसक निशान  
न थावन तमाह, दुय, न चरब, मन हमी;  
ब थावय खेरबस मंज तिहुंद जिस्मुजान ॥  
(किता २२)

अंदस प्यठ तिमय लुख मे वासिल गकान,  
यिमन हुजं इबादत-खलूसक निशान ।  
न थावन तमाह, दुय, न चरब, मन हमी;  
ब थावय खेरबस मंज तिहुंद जिस्मुजान ॥

थन्य चूरि यमिल गोरि ह्ययथ कृष्ण गोपाला,  
तस खंचु नु ड्यकस द्रुह तु दिलस गव नु मलाना ।  
मातायि चै मोसूम बेनुय लफजि "मखन चोर",  
मछ युथ नु लगी बालुका! छुल इसनि कमाला

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय ।

बुद्धी धारणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥४९॥ सुकृतदुक्ते । उमे जहातीह बुद्धियुक्ता





## تھکنہ لور

گبو، دود تہ گرس کیاز تہ اندیشہ کرتھ چوتھ  
 بھلوانہ! پسند باگہ بوڑت شہجار لکن دوت  
 زو منگتہ، جگر منگتہ تہ لرح منگتہ دل و جان  
 موصومہ لکے کیاز اسی لور مکھن کھیوتھ

۱۔ اندیشہ کرتھ۔ کھوڑی کھوڑی ۲۔ لرح۔ آتما ۳۔ مکھن۔ تھن

۲۸۔ زکا ہوں سے پہلے نہاں ہوں وجود یہ پھر تیج میں کچھ عیاں ہوں وجود



देही नित्यमवधोऽयं देहे सर्वस्य भारत ।

तस्मात्सर्वानि भूतानि न तं व्योचिष्यमर्हसि ॥

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन-  
आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन-  
॥१२८॥

پَرَکھ یوَد کِشَن لَیلا گِیَان لاری  
اَهَنکارک یوہے سِیما ب ماری  
یہ حَاصِل گوئی تہ سِپد کھ کِمیَا گر  
یوہے گون ساگرن منز تار تاری

परख योद कृष्ण लीला ज्ञान लारी ;  
अहंकारक योहय सीमाब मारी ।  
यि होसिल गौय त सपदस कीमथागर ,  
योहय गोण सागरन मंज तारु तारी ॥

ग्यव, दुद, त गुरुस क्याजि चै अदेश करिष चोथ,  
भगवान् ! यहुंद बागि केहत शेहजार लुकन बोत,  
जुव मंगतु, जिगर मंगतु, व रह मंगतु दिलो जान,  
मोसूम ! लगय क्याजि असो चूरि मक्खन ल्योष ॥

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।

अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना । १२८ ।

आश्चर्यवत्पश्यति

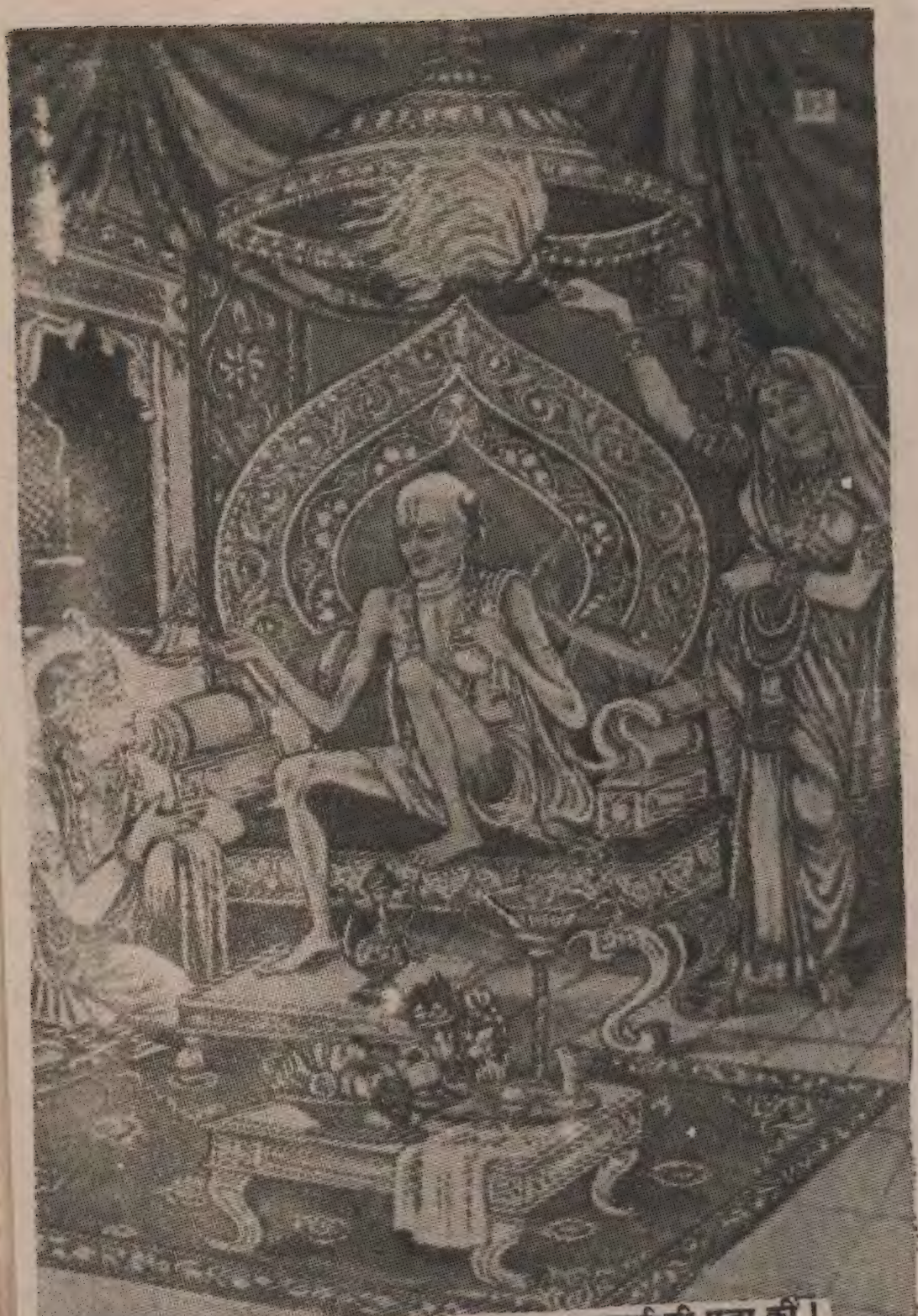
कश्चिदेन



کران پوز کرشن جی دوستاں  
 سدا اکھ فقیرا تے کرشن شاہ  
 وفاداری، دیانت، نیک سپرت  
 خلوصک شریہ تہ جندج جا ذہبت  
 اکٹھکن نے مہا بھارت بندھکن !  
 چھ دوشو منزدوان مکتی سہ لوکن  
 بجز گوئی تہ عرفانک تھری پی  
 ہمشرتس نش ہمشریس تہ یارس  
 مگر وچھتو سیمن دوقن منز فرق چھا  
 تہماں بالکراون پوز محبت  
 کرشن جی چھے کران داسن عنایت  
 اکٹھکن تھنوی قتل غارت بندھکن !  
 یچھے بخشاں ست آکاھی چھے بھلون  
 تھوں قائم یچھی گوہ چھے کرشن جی

کران पूजा कृष्ण जी दोस्तानस ,  
 हिशर तस निश—हिशर यारस तु यारस ।  
 सुदामा अख फकीराह तय कृष्ण शाह ,  
 मगर वुछतव यिमन देन मंज फरक छा ।  
 वफांदारी, दियानत, नेक सोरत ,  
 तमामन बागरावान षोज मुहबत ।  
 खुलूसुक श्रेह तु जजबुच जाजिबियत ,  
 कृष्ण जी छुय करान दासन अनायत ।  
 अकिथ कुन 'नय'—महाभारत बिधिथ कुन ,  
 अकिथ कुन 'थन्य'—कतल, गारत, बियथकुन ,  
 छु दुहेवन्य मंज दिवान ओदार लूकन ,  
 यिथय बखशान सत आगाही छु भगवन ।  
 बजर गव ई तु ईफानुक थजर ई ।  
 थवान काइम यिथी गुण छुय कृष्ण जी ।





भगवान्ने स्वयं पूजनकी सामग्री लाकर सुदामाजीकी पूजा की।





कृष्ण

# کرشن سدا

کرشن مہراج اکھ بالک اوستھا  
میتراوس بالہ پانک تس سدا

یمن اوس شریلہ منز یارانہ یارز  
کران تھ پیٹھ رشک اس پانہ یارز

سدا ما عمر منز بہر ونہکن پکان گئے  
کرشن اوتار تس پیٹھ ایشور دے

سدا ما اکھ گرتستی سادھ بلکل  
کرشن اوتار: مہراج ماکب کل

کرشن اوتار گو مشہور عالم!  
یوان اسی درشنس تس سادھ کم کم!

کرشن سدا قصبہ پندروستی نہ یاد اوتار ہی ہند اکھ تارہ نجی تہ یوشون اوتار

۳۱۔ تراویض کیا ہے کہ اس پر نظر نہ جی دے گا اس کی تائید کرے



अथ चैत्रमिमां धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि । ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सुदामा



कृष्ण महाराज अख बालक अवस्था  
मित्र ओस बाल पानुक तस सुदामा ।

यिमेन प्रोसः शुर्यलि मंजु यारानु, यारज्,  
करान तथ प्यठ रशक प्रोसः पानु यारज् ॥

सुदामा वृमर्षि मंत्र ब्रह्म कुन पकान गय  
कृष्ण अवतार तस प्यठ ईश्वर दय ।

सुदामा अख ग्रहस्ती साद बिल्कुल,  
कृष्ण अवतार महाराज मालिके कुल ।

कृष्ण अवतार गव मशहूरि आलम,  
यिवान आस्थ दर्शनस तस साद कमकम।

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि ।

वर्ण्यादि युद्धान्त्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ यद्व्याघ्रहच्छया  
चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।



سدا ما و دتھ ملاقات گوتھ مہ سیدن  
نصیبس لبکھتہ میانس کرشنہ درشن



تیاری کر سدا سن زیمہ سفرچ - ٹلن سستی تحفہ پھچھہ بیلی توہی  
پکان گوتھاکھ کڈان گوہر ونہ پکان گوہر کڈان و تھ الفج زنہ ماتھکا گوہر  
کرشن و چھنک تمنا س دلس پیچھ  
اچانک کرشنہ لاس گوہر گوہر - سدا ما اندریم من چھم مہ توہن  
سدا ما او دربارس اندر راو - کرشن ہراج یورے انہ تلس دراو  
راوایتھ چھ ز سدا س اوس تحفہ پھچھہ منر سر بیتھ تہچہ علاقائی زبان منر سدا نان

مہ چھہ لوگ دیکھتھیں گے تحفہ کرشنہ، نہ لیں گے ترانام، تو قیر دیکھتھیں گے



अवाच्यवादांश्च बहुन्वादिष्यन्ति तवाहिताः । मुद्रादिभिर्निन्दन्तस्तत्र सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ॥

सुदामा बोध मुलाकात गोछ मे सपहुन !  
 नसीबस लेखतु म्यानिस कृष्ण दशुन ।  
 तय्योरी कर सुदामन जेठि सफरुच ,  
 तुलुन सूत्य तोफु फुटजा "बेल्य तोमलुच" ।  
 पकान गव , थक कडान , गव ब्रोंह पकान गव ,  
 कडान वय उलफतच जांह मा थकान गव ।  
 कृष्ण वृछनुक तमन्ना तस दिलस प्यठ ।  
 तु अथ्य शोकस अन्दर वीत मेजिलस प्यठ  
 अचानक कृष्ण लालस गव यि गोशन  
 सुदामा अज यियम मन छुम मे तोशन ॥  
 सुदामा आव दरबारस अन्दर चाव ,  
 कृष्ण महाराज योरय अननि तस द्राव ।



अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्

संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ ३४ ॥ भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः ।



اون با شان و شوکت پورِ حشمت - یہ چھنا بالہ پاک تر بہتہ الفت  
 سدا ما کھور کر شتن پانہ تختس  
 کراں ساری رشک تس نیک تختس  
 پیاری تختس بہتہ اوتار وقتک - پیاری کیو چھس سدا یاد وقتک  
 اگس سیتی اکھ بہتہ لول باگر لوان - یہ دلستہ جھی وزیرن ہوش روان  
 سدا سن بیالو تو ملیج ڈالو کڈ نئی  
 کمرن پیش کر شتہ لالس تس تھنی تھنی



کرشن لالس موٹھ کدھ ساد ہو او - کھوان گو مہہ کران انس نہ ٹھرو



एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु ।  
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥

॥२६॥ शिखिवाक्सीति ॥३८॥

मोनुन बा शानु शीकत पूरि हशमत ।

यि छसना बालु पानुक स्नेह त उलफत ।

मुदामा खोर कृष्णन पानु तस्तस,

करान सारी रशक तस नेक बखतस ।

यपोयं तस्तस बिहिथ अबतार बक्तुक

हुपार्य किन्य छुस मुदामा यार वक्तुक ।

अकिस सूत्य अख बिहिथ लोल वागरावान

यि डोशित छी वजीरन होश रावान ।

मुदामन व्याल्य तोमलुच डाल्य केड नेन्य

करनु पेश कृष्ण लालस युस धनी धन्य ।

कृष्ण लालस मोठा ख्यत स्वाद खुव आव

ख्यवान गव, माह करान आसस नु ठहराव,



हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्

तस्मादुचिष्ट कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥३७॥ सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभी जयाजयो ।



کرشن لالں پرتھس سور حال احوال - نہیں بجائیں رازت روپ تے مال  
 سدا مانہ لوگ بس دو کہن چھم - چھ اتھ منزتھ گڈاران سا کیو دم  
 سوخن زبٹھان کے دفتر بڑتھ آئے  
 اتھ پتھکن نہ روزان راز سرسا



سدا مانہ کرشن لالں سستھم  
 سدا مانہ تس نہ گربارک کہنے غم  
 سمے کافی گڑھاں اتھ کاروبار - ہوان روختھ چھ آخر یار یار



यामिमां पुष्टितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।

वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥४२॥

कृष्ण लालन प्रछुस सोर हाल महवाल,  
जमीन, जायुन, जिरात, रोपयि तय माल ।

मुदामा वननि लोंग "बसडोकुहन छम,  
छि अथ्य मंज सथ गुजारान साथ तय दम ।

सोखन जेठान गेय दफतर बैरिथ आय  
अत्यथ पथ कुन नु रोजान राज सिरसाय ।

मुदामा कृष्ण लालस सूत्य हम दम  
मुदामा तस नु गरबारुक कुहंय गम ।

समय काफो गछान अथ कारवारस,  
हवान रोखसथ छु आ'खुर यार यारस ।



नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ॥

कुलनन्दन । बुद्धिरेकेह । व्यवसायात्मिका । भयान । स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो ॥



کراں رخِ صفتہ کرسن جی تس فترس۔ سُداس ظون ز شری آسن مہ بیکس  
 پھران کوتہ سدا کرشنہ لائن۔ سواری پیچہ کھستہ دروازہ گرس کن  
 دزل بر و نہ بر و نہ چھوئے دف تہ دم  
 وناں ساری ساری سدا راجہ جوچھم  
 ولتہ زلف تہ سونہری تاج بر سر۔ سدا از شہن ہندشہ بہر  
 گرس کپتہ ووت گاس منز سدا  
 خبر کیا چھس ز گاس منز سپد کیا  
 وچھن گاہو کراں تس پونپری گتہ۔ اُس تعظیم سان ناوان گرج و تہ  
 ہنہ بر و نہ کن پکتہ دلشن عمارت  
 عمارت چھا سورگ چھا باغ جنت  
 خبر لے وواعیالس تم ز رستہ آئی۔ دوان زن خور غلمان سورگہ منزی درو  
 سدا مال پانہ عارن خواب دیشان  
 یہ سوئے کیا وچھاں چھس چھسہ زان  
 بہ ما چھس رو و مت باہگانہ گنت۔ میتہ ڈوکس چھ از پیلین بنیوت  
 ۱۔ رستہ بہ جوہر گتہ۔ ۲۔ سورگ جنت ۳۔ پیلین۔ شاہی محل۔

۳۔ چھس کو بت میں وہ گروں کا چھلنا سدا میں زرد و عیش کے امور عمل



गुणविषया वेदा निर्वर्ण्यो भवार्जुन ।  
निर्वन्दो नित्यसत्त्वयो निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥

करान रोखस्य कृष्ण जो तस फकीरस  
सुदामस जोन जि शुर्य भासन में बेकस ।

फिरान कोताह सुदामा कृष्ण लालुन  
सबारी प्यठ खसिथ द्राव अज गरस कुन ।

वजान ब्रोंह ब्रोंह छे सुरनय दफ तु डुम डुम,  
वनान सारी सुदामा राजि ह्युव छुम ।

बेलिथ जरबफ त' सोनहय ताज बर सर,  
सुदामा अज शहन हुन्द शाह बराबर ।

गुरिस क्यथ वोत गामस मंज सुदामा,  
खबर क्याह छस जि गामस मंज सपुद क्याह

बुछिन गामुक्य करान तस पोंपरिन्य गथ,  
अमिस ताजीमु सान हावान अरुच बथ ।

हना ब्रोंह कुन पकिथ डीशन अमारथ  
इमारथ छा! स्वर्ग छा! बागि जनथ ।

खबर लंज वल्य अयालस तिम बसिथ आय,  
दवान जन हरु गिलमान स्वर्ग मंज द्राय ।

सुदामा पानु हागान खाब डेशान,  
यि सोरुय क्याह बुछान छुस केह नु जानान ।

ब' मा छुस रोवमुत बेगानु गोमुत,  
येत्यथ डोकस छु अज पैसस बन्योमुत ।

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।

तथापहृतचेतसाम् ।

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां

क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥४३॥



وچھن آستینو بہتہ منز محلہ خاٹس  
کران پوزا، بران لول کرشنہ لاس



سدا مچھس دپان آخر یہ گئی کوڑ۔ یہ گئی پرشن مہ پر تھنے لول تھ پوزا  
وڑھس آستینو امی کرشنن پوزا لول۔ وندس شری باڑہ مالین مول تے موج  
عمرات باغ مندر فرش محسل۔ تھی گئی تھ عفات یوت بل بل  
کرشن یس پچھ کران چھ مہرانی۔ بنان سون مہر لون انسان فانی

وہ انسان برہم کا گیتان سے کہہ کر مہر کا ندوں یہ کب دھیان ہے



शालाः कुरु कर्माणि सप्त तयक्ता धनजय ।

सिद्धागिदयोः सगां भुक्ता समस्त याग उन्नय

वृद्धिन प्राशन्य बिहिष मंज महलु खानस,  
करान पुजा बरान लोल कृष्ण बालस ।

मुदासा छुस दपान मोखुर यि कम्य कोर ?  
यि कम्य पुरशान में प्रछनय लोल युध बोर ।

वृद्धस प्राशन्य "अमो कृष्णन बोहम लोल,"  
वन्दस शय बाच माल्युन मोज तय मोल ।

प्रमारथ, बाग, मन्दर फशि मखमल,  
तमो कर यिछ अनायथ यून जलजल ।

कृष्ण यस प्यठ करान छुय मिहरबानी,  
बनान सुन हेरि बुन इन्सानि फानी ।

اکھ سدا چھائیس پیٹھ کر دیا مولی دزن  
اکھ دلہ چھائیس بکس در تہند کنول چرن  
یوزیر عکھ پائس اندر تھاون کرشن پرون کرشن  
شرط اول اتھ مقاس چھے پنج زونج لکن

अख सुदामा क्हा येमिस प्यठ कर दया मोरली दरन  
अख विला क्हा यथ नु बसकीन दरत हैद्य केवल चरन  
येद यद्धुरव पानस अन्दर थावुन कृष्ण प्रावुन कृष्ण  
शर्ते अवल अथ मकामस क्य मनचे, रुहैचलगन ।

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके ।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।  
विज्ञानतः ॥४६॥  
ब्राह्मणस्य विज्ञानतः ॥४६॥  
वेदेषु ब्राह्मणस्य विज्ञानतः ॥४६॥  
तावानसंचेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विज्ञानतः ॥४६॥





کَرِشَن گودُون سَمَتِ کَرِشَنک سَمَدَرِ  
 اَوْتَمَه وَ اَوْتَمَه بَنانِ پَرِ تَه قَطَرِ سَاگرِ



غریبن، غلسن ہند مال گوپال  
 یمن کوچہ شہر تہمن ہند لال گوپال  
 یمن زخمس اندر پیترن پیوان یچھ  
 تہمن پیرشن سہٹھارت فال گوپال

गरीबन, मुफलिसन हुंद माल गुपाल ,  
 यिमान कोछ हंर तिमन हुंद लाल गुपाल ।  
 यिमान जनमस सुन्दर प्यतरन पवान यह  
 तिमन पुरुषण स्यठा रुत फाल गुपाल ॥

कण गव दुन समुत गछनुक समन्दर  
 मोतथ बातिथ बनान हर कतर सागर ।





گلن ہنر سمنٹ پھانپھلاوا کرشن جی  
 سنج گلبستانہ بناواں کرشن جی  
 یمن آسہ پرتہ بیچ تہ پرتہ بیچ دلس چھ  
 تمہن امریت کیالہ چاواں کرشن جی  
 کرستانہ پارہ سوتہ ہندیہ مسکھ مسلمان  
 نظر کنو یمن پیچھ چھ تر اوں کرشن جی  
 دودس شیکرس منتر تفاوت پشارہ  
 ہنر آدنک چھے رلاواں کرشن جی



स्थितप्रज्ञस्य का माया समाविश्यस्य केवल ।

अर्जुन उवाच

स्थितधीः किं प्रमायेत किमासीत ब्रजेत किम् ॥

समाधावचला बुद्धिस्तथा योगमायावति ॥

## कृष्ण जी

गुलन हुंद समुत फांफुलावान कृष्ण जी  
अजब गुलिस्ताना बनावान कृष्ण जी ।

यिमेन आसि प्रेयमुच तु पजरुच दिलस खिह  
तिमेन अमरितकय प्यालु चावान कृष्ण जी ।

किरस्तान्य, पारस्य त हेन्द सिस मुसल्मान  
नजर कुन्य यिमेन प्यठ लु त्रावान कृष्ण जी ।

दोदस शेकरस मंज इशारा तफावत  
हिशर आदनुक लुय रलावान कृष्ण जी ।



यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ॥

तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ यदा स्थास्यति निश्चला ।



دُئی ہند نہر، تفریق نہیٹ الیش  
چھ مودہ لی بجاو تھ مٹاوان کرشن جی



کتھن منتر تھز چھس تہ مودہ لی اثر چھس  
زلن پیم نہ نہ نہہ تم رلاوان کرشن جی  
یہ مٹھرا یہ چمنایہ گنگا یہ رادھا  
سمے گو مگر توتہ کاران کرشن جی  
سیہ ہر د والیو تمس نش شوہر لوب  
کھوٹس کیمپا چھ بناوان کرشن جی  
بزن لول گوپی تمس شوہر شائے  
تمن منتر چھ دوہ دین گراڈن کرشن جی

شری بھگوان کا ارشاد ہے  
سہ مرکب دوہ نیمہ ستو کھوڈ دھاسون چھ بنان

۵۵۔ تو بھگوان بولے جو جو خودات جو من کرے دور سب خواہت



नः ॥३५॥ स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ॥३५॥

दुई हुंद जहर तफरुकच छेटे अलायिश,  
छु मुरली बजाविथ मिटावान कृष्ण जी।

कवन भंज कजर कुस तु मुरली असर कुस  
रलन यिम नु जाँह तिम रलावान कृष्ण जी।

यि मथरा, यि जमना, यि गंगा, यि राधा,  
समय गव मगर तोति गारान कृष्ण जी।

सियाह हृदयि वाल्यव तमिस निश शोजर लोब  
खोटिस कीमिया छुय बनावान कृष्ण जी।

बरान लोल गूपी तमिस श्रोचि शाने,  
तिमन भंज छु दोह दान गुजारान कृष्ण जी।



श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्यार्थ मनोगतान् ।

आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ॥३५॥

सर्वभानमिस्नेहकृतत्वात् शुभाशुभम् ।  
नामिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥



۲  
 ۳  
 ۴  
 ۵  
 ۶  
 ۷  
 ۸  
 ۹  
 ۱۰  
 ۱۱  
 ۱۲  
 ۱۳  
 ۱۴  
 ۱۵  
 ۱۶  
 ۱۷  
 ۱۸  
 ۱۹  
 ۲۰  
 ۲۱  
 ۲۲  
 ۲۳  
 ۲۴  
 ۲۵  
 ۲۶  
 ۲۷  
 ۲۸  
 ۲۹  
 ۳۰  
 ۳۱  
 ۳۲  
 ۳۳  
 ۳۴  
 ۳۵  
 ۳۶  
 ۳۷  
 ۳۸  
 ۳۹  
 ۴۰  
 ۴۱  
 ۴۲  
 ۴۳  
 ۴۴  
 ۴۵  
 ۴۶  
 ۴۷  
 ۴۸  
 ۴۹  
 ۵۰  
 ۵۱  
 ۵۲  
 ۵۳  
 ۵۴  
 ۵۵  
 ۵۶  
 ۵۷  
 ۵۸  
 ۵۹  
 ۶۰  
 ۶۱  
 ۶۲  
 ۶۳  
 ۶۴  
 ۶۵  
 ۶۶  
 ۶۷  
 ۶۸  
 ۶۹  
 ۷۰  
 ۷۱  
 ۷۲  
 ۷۳  
 ۷۴  
 ۷۵  
 ۷۶  
 ۷۷  
 ۷۸  
 ۷۹  
 ۸۰  
 ۸۱  
 ۸۲  
 ۸۳  
 ۸۴  
 ۸۵  
 ۸۶  
 ۸۷  
 ۸۸  
 ۸۹  
 ۹۰  
 ۹۱  
 ۹۲  
 ۹۳  
 ۹۴  
 ۹۵  
 ۹۶  
 ۹۷  
 ۹۸  
 ۹۹  
 ۱۰۰



۱  
 ۲  
 ۳  
 ۴  
 ۵  
 ۶  
 ۷  
 ۸  
 ۹  
 ۱۰  
 ۱۱  
 ۱۲  
 ۱۳  
 ۱۴  
 ۱۵  
 ۱۶  
 ۱۷  
 ۱۸  
 ۱۹  
 ۲۰  
 ۲۱  
 ۲۲  
 ۲۳  
 ۲۴  
 ۲۵  
 ۲۶  
 ۲۷  
 ۲۸  
 ۲۹  
 ۳۰  
 ۳۱  
 ۳۲  
 ۳۳  
 ۳۴  
 ۳۵  
 ۳۶  
 ۳۷  
 ۳۸  
 ۳۹  
 ۴۰  
 ۴۱  
 ۴۲  
 ۴۳  
 ۴۴  
 ۴۵  
 ۴۶  
 ۴۷  
 ۴۸  
 ۴۹  
 ۵۰  
 ۵۱  
 ۵۲  
 ۵۳  
 ۵۴  
 ۵۵  
 ۵۶  
 ۵۷  
 ۵۸  
 ۵۹  
 ۶۰  
 ۶۱  
 ۶۲  
 ۶۳  
 ۶۴  
 ۶۵  
 ۶۶  
 ۶۷  
 ۶۸  
 ۶۹  
 ۷۰  
 ۷۱  
 ۷۲  
 ۷۳  
 ۷۴  
 ۷۵  
 ۷۶  
 ۷۷  
 ۷۸  
 ۷۹  
 ۸۰  
 ۸۱  
 ۸۲  
 ۸۳  
 ۸۴  
 ۸۵  
 ۸۶  
 ۸۷  
 ۸۸  
 ۸۹  
 ۹۰  
 ۹۱  
 ۹۲  
 ۹۳  
 ۹۴  
 ۹۵  
 ۹۶  
 ۹۷  
 ۹۸  
 ۹۹  
 ۱۰۰









تسند سُرہیہ پشن، وڈوہن، ووشین تاک  
 زھینا چھا تمہن یم چھ پالان کرشن جی  
 حسد خون ہار، خشمہ ہوت نار ترپان  
 چھ زکٹک زکٹ وڈوہ پپان کرشن جی  
 یمن تاپہ کرالو چھ میتر شور کر مٹر  
 تمہن سیکلین پیچھ چھ باران کرشن جی  
 چھیل تھ زھن یمو کام، کرود، موہ، انکار  
 پوہتر تمہن جان جانان کرشن جی

ایشوت ۲۔ ٹرکھ ۳۔ طمع ۴۔ غورور ۵۔ سرہیہ۔ پیار

اہ۔ جو اس اپنے زول اور کا مجھ میں دل، تو سہ شاز ہو یولک میں تھیل



क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।

स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

सङ्गत्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥

सङ्गस्तेषूपजायते ।

विषयान्पुंसः

ध्यायतो

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

तसुन्द सहे पशन, बुडबुन्यन, वहशियन ताम,  
छयनह छा तिमन यिम छु पालान कृष्ण जी।

हसद खुंखार, खशम होत, नार चापान  
छु जगतुक जगत वोन्य चे प्रारान कृष्ण जी

यिमन ताप क्रायव छे मेच शोरु करमुच  
तिमन सेकिल्यन प्यउ छु बारान कृष्ण जी।

छेलिथ छुन यिमव काम, क्रुध, भोह अहंकार,  
पवितर तिमन जानि जानान कृष्ण जी।



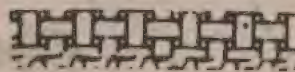
तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।





یمن کنہ نہ آسان یمن دل پریشان تم بیکس ہند چھ سامان کرشن جی

یہ ٹھنی ہو مجسم چھ حنک جالک  
چھ فاضل دلس منز بساوان کرشن جی



۶۴۰ جو کرتا ہے محسوس دنیا کی سیر نہ الفت کسی سے ہے جس کو نہ سیر



नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।

न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥

چھ برہمن دھرم۔ کیا ان مضبوط راستی  
 لہو۔ حق شناسی تو پاکیزگی  
 تقویٰ ترک۔ عیش و عشرت حرام  
 طمع ترک نہ تھاؤں چیلوں من، مہی  
 کرشن (گیتا ۲/۴۱)

छ ब्राह्मण धर्म—ज्ञान जब-त रास्ती,  
 नबुन्य हक शनासी तु पोकीजुगी  
 तगोफुल तरक माश ब मशरत हराम,  
 तमाह, बस न पाबुन्य छलुन्य मनहमो  
 (गीता)

यिमेन कांह नु आसान, यिमेन दिल परेशान,  
 तिमेन बेकसन हुंद छ सामान कृष्ण जी।  
 यि थन्य ह्योव भुजसुम छ हुसनुक जमालुक  
 छ फाजिल दिलस मंज वसावोन कृष्ण जी।

रागद्वेषवियुक्तेस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।

आत्मबन्धस्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति । ६४ ।

हानिरस्योपजायते ।

सर्वदः खाना प्रसादे





بالسری ہند ساز گو سیاہن کن  
چھس اوے کنی کرشنہ شبن کن تھون  
کرشنہ شبدو بخشتم گنگایہ جل  
تھمہ رھم اتھ منر کو ریم شود تن بدن



نوٹ :- ایشبد = لفظ ۲۔ بخشتم = دیتا ہوں ۳۔ جل = آب، پانی ۴۔ شود = ٹھلص

۴۶۔ واسا اومی کے جھکاتے ہو کر دیکھو اس پر رزہ کر دی گا وہاں پر اس پر









بالہ پانس لگو تے اندھ میون آے  
 زووندے! سوہرلی تلا اندھ کرشنہ والے

چاہے حُسنک پرتوہ دیدن کُشش  
 چون پیکر جذبہ پُتر بچہ بربرہ کراے

چاند حُشمت چاند عظمت چاند کتھ - کہنہ نہ ہمیس منڑ رہ ہوئی ساڈرے

تھے = وقت

عظمت = بزرگی

چاند حُشمت میں غائب ہوں بڑا ہزار ہا ہے کا وہ لکھنؤ اور باوقار



पुत्रा ब्राह्मी स्थितिः पर्यायैनां प्राप्य विमुह्यति ।

स्थित्वाशामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्माणमुच्छति ॥

॥ प्रकृत्यामन्तकालेऽपि स शान्तिमाप्नोति ॥

## मोरलीदर

बालु पानस लंगतनय अज् म्योन आय,  
जुव वन्दय ! मोरलो तला अज् कृणु वाय ।

चानि हुसनुक परतवा दीदन केशिश  
चोन पयकर जज्बु प्रियमुच सियि काय ॥

बान्य हशमत, चान्य अज्मथ, चान्य छव,  
कांह न समयस मंज् जे ह्युव यो सान्य राय ।



(१) आय—वीसि हुंद वल, (२) परतव—जलव,  
दीद—अछ,

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं

समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।

सर्वे यं प्रविशन्ति सर्वे

तद्वत्कामा

स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ।



چانہ مودلی ہنر درے! افتادہ تھے  
داس پیاراں چھی تہ اند کاسکھ انیائے

اکھ دمہ چشمین اندر کرشم قرار!  
عمر لوسم تری وچھان کر میون پائے

تھے چھہم پریمک صنم، روٹک ہرش  
سارے لول باکراون چون دے

یوت ترو سو ندر بناوتھ چون مہ کھ  
عسارتن گو پانہ کار پگر خود دے

ساسہ بدی رنگ بدلوئی رو دم زخم  
یس زوس منتر چھاکھ بلیتھ سے اکھ ہول

چانہ پتریمچ چھہم منس لچر مہ چھم  
لولہ برتو! فاضلس چھے چانویاے

سازون ادھائے

شری بھگوان نے فرمایا

ایسن ارجن! امان چھہ پائے ہوئے نامری ذات میں لولہ کائے ہوئے



मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चित्तति सिद्धये । यत्तामापि सिद्धानां कश्चिन्मां वेति तत्त्वतः ॥

बानि मोरली हुंज द्रव्य अवतार चय,  
दास प्रारान छौ च अज कासुख अन्याय ॥

अख दमाह चरमन अन्दर करतम कगर,  
उमरु लोसम चैय वुछान कर म्योन पाय ।

चय छुहम प्रेयमुक सनम, रुहुक हर्ष,  
सारिनय लोल बांगरावुन चोन दाय ॥

यूत चोर सोन्दर बनाविथ चोन मोख,  
हारस्तन गव पानु कारीगर खोदाय ।

मासवेद्य रंग बदलवुन्य रुदिम जन्म,  
यस जुवस मंज छुख बेसिथ मुय अख बेवाय ॥

बानि प्रेयमुच छिह्य मनस लेजमुच मै छम,  
लोल बेत्यो । 'फाजिलस' छय च्यान्य माय ।

(१) माय—वाँसि हुंद वख, (२) परतव—जलव,  
दोद—अछ,

(१) पाय—चार, (२) हर्ष—सरूर,  
(३) दाय—मशवर, मोख—बुथ, (५) माय—प्रेम,

अथ सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।

वक्ष्याम्यशेषतः । सविज्ञानमिदं ज्ञानं तेऽहं ब्रूयान्मया तच्छृणु ॥ यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥ असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥



یکدلی



یکدلی ہندو شہ گوان چھے بانسری  
 یس گنن گو و نمنہ لوگ جے جے ہری  
 من پو مٹر یس سپد یس مے چھ شاہ  
 کینہہ مسلمانی کر یس کیاہ کافر

اسلامیہ روح کی تابش مزا لور ہے، جہاں جس کے جلو وں سے مہمور ہے۔ اسے چاند



सर्वमूर्तास्त्रितं यो मां मज्जयेकत्वमास्थितः ।

सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते । ३१ ।

کئی یس نظر تے چھ گیا فی وناں !  
تمہیں نشہ نہ چنڈال ! برہمن ز جہان ॥  
وہی ہند سپٹھاہ دور یحساس تے ۱  
سہ گاو ہون تے ہوس چھ یکسان ویندان

(گیتا १/۵)

गिता १/५

कुनी यस नजर तस छि ज्ञानी बनान  
तमिस निश न चंडाल, ब्राह्मण ज जाना।  
हुई हुंद स्पठाह दूर इहसास तस,  
सु गाव, हून, तय होस छु इखसान व्यंदान  
(गीता)

यकदिलो हुंद शह ग्यवान छय बांसुरी  
यस कनन गव बननि लोग "जयजय हरी"।  
मन पवितर यस सपुद बस सुय छु शाह,  
कया मुसलमानी करघस कया का'फिरी ॥

यच्चन्द्रमसि यच्चाशौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।





بالہ پانس لاگئے جائے چھتی  
کرشنہ لالو! بس بیٹی سمکھاتی

پانہ از گنگا پہ ہند جل باگراؤ  
چاوتکھ امرت مہ ہوی تریشے ہتی

پیم نشا طس، شالما رس پوس پھل  
ژاری ژاری تم لاگئے کاسے ہتی



एवधोनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय ।

अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥६॥

و جودک سر میخ روشن سبیل بن  
ذرا ظاہر مشر - اندری دل س سن  
گرن اور پن اس سن نہ اس  
دیج حرکت بناون کرشہ سمرن

वजूदुक सिर, मनुच रोशन सबील बन  
जरा जहिर मशर, अन्दरी दिलस सन ।  
करुण आबुर पनुन आसुन न आसुन  
दिलचि हरकथ बनावुन कृष्ण स्मरण ॥

### कृष्ण लालो

बालू पानस लागहय जामप छेती,  
कृष्ण लालो बस येती समस्तक तती ।

पानू अज गंगायि हुंद जल बागराव,  
चावतख अमृथ मय हिव्य त्रेजे हेती ॥

यिम निशातस शालमारस पोश फोल्य,  
चायं चायं तिम लागहय कारे पती ।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च ।

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ।  
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥४॥



نوہ آگر سر پہ موکھ چھے آنہ پوٹ  
 میری لون پانس پرون ہندی کہہ دھئی  
 خور ہند پیکر تہ تھنی ہوا چھے شر پہ  
 نالہ رٹھتہ اکھ دہہ روز تم اُتی  
 چون آکار چھم ستن برتن بہہ اش  
 یم شعور کی بردہ تھوئے دھئی  
 دل چھ بھر سٹ تے کرو دھ اندر سمیک سبھاو  
 بیر اکھ اگڑ تھوان سمیک مٹی  
 چھی فدا پادن گمتری پمپوشہ سر  
 کھیل چھ آسن بہتہ بہتہ آئے کتی  
 اکھ بنو موہلی دُرَن آدیش پوز  
 فاضلا است دوپ چھ داسن ہندی



पुष्पो गन्धः पुष्पिण्यां च तेजश्चास्मि विभावसी ।  
जीवनं सर्वमृतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥९॥

नर आगुर- मिरयिमोख छुम आनु पोटे,  
हेरि बोन पानम प्रवन हुन्छ गाह वथो ॥

हरि हुन्द पंकर तु थान्य ह्यव छुय शरीर,  
नालु रट्ठुय अख दमा रोजूम भेती ॥

चोन आकार छुम सतन वरन्यन मे आश,  
यिम शऊरुक्क्य बर दोहय थव्यमय वथो ।

दिल छि ब्रष्ट तय कोथ अज समयुक सोबाव,  
बेर अख अक्क्यसुन्द थवान समयिक्क्य भेती ॥

छो फिदा वादन गोमृत्य दम्पोशि सर,  
व्यन्न छि आसन ह्यथ बिहित्य आरय केतो ।

“अख बनिव” मुरलो दहन आदेश पोजे,  
फाजिला ! सत दोप छु दासन हुन्द पंती ॥

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय ।

प्रभासि शशिचर्ययोः ।  
रसोऽहमस्मि  
मणिगणा इव ॥७॥  
मयि सर्वमिदं प्रोतं सुते





گنگاہ پچھ

راہا و نان چھ نا تھس۔ دو د ما نچھ ہو ترہ پیکر  
 درشن سہ کالو دکھنا اچھ چانہ دور رک شر  
 اچھ میانہ لوسہ و انس۔ گنگاہ پچھ ترہ پیارن  
 موہی شہد گڑھان چھم۔ گوشن تر نیچہ بھٹس تر  
 اندر اندر ترہ رقصہ با پتھ۔ گم موہ کھنول انتھ تھو  
 یم چانہ لولہ پیرتھ۔ رنگین پیرتھ زلیور

۱۔ دور پر = فراق ۲۔ گوشن = گھن ۳۔ زلیور = گہنے

۱۔ سن ارجن میں ہوں تیج ہر رست کار میں وہ تیج ہوں جو نہ ہو کا فنا



ये चैव सात्त्विका भावा राजसात्सामसाश्च ये । १११ । मङ्गलम् मङ्गलम् मङ्गलम् मङ्गलम् मङ्गलम् ।



राधा वनान छे नाथम—दुद, माल छु व जे पैकर  
दशुन में काव्य दिखना! छुम चोनि दूरिरुक शर ।

मल म्यानि लोसु वीसन— गंगायि प्यठ जे प्रारान  
मूरली शब्द गछन छुम मोशन जे यथ बंटिस तर ।

अन्य अन्य जे रकसु बापय कम्प मोरुख्योल अनिथयोव  
यिमचानि लोल पूरिष रंगीन पर त जेवर ॥

मत् एवेति तान्निद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥ १२ ॥

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।

कामरागविवर्जितम् । १० । तेजस्तेजस्विनामहम् । बुद्धिर्बुद्धिमतामसि ।



نے

( نے چھ بہانے .... "مورلی شہزادہ اسے گوکن ورن چھ راجا کرشنہ ہے آو )

کس نام وایان! لکھ چھ دیان نے چھ ورن نے  
گوپالہ تریہیم ویدی چھ دیان  
نے چھ بہانے .... نے چھ بہانے

تصویر آتش خانہ مجازس چھ دیان ڈول  
منز ناہ برہمن طور سنگر  
تو ورن نے .... نے چھ بہانے

نے نغمہ شیرینو - من چھ برہمان - زوچھ ورن کل  
یتھ نغمہ پرائن ہعرقک  
سرہیہ چھ برہان نے .... نے چھ بہانے

کنوں کے وصف تینوں عیاں کے ہوتے ہیں گئے لکراہ اہل بہان



न मां दुःकृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः ।

माययापहवज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः । १५ ।

(नय छ बहानय)

“मुरली गब्दा गव असि कनन  
वनन छि राधाकृष्ण है आव”

कुस ताम वायानलुख छि दपान नय छि बजानय,  
गूपाल जे यिम बैद्य छि दपान,  
नय छि बहानय—नय छि बहानय

तसवीर घातशस्त्रान् मजाजस छु दिवान डोल  
मंज नारु ब्रहेन तूर संगुर  
तोति दजान नय—नय छि बहानय

नय नगम् शीरीरमन छु ब्रमान, जुव छु जुवान कस  
युथ नगम् प्राबुन मायफतुक  
अह छे बरान नय—नय छि बहानय ।

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत् ।

मायेन ये प्रपद्यन्ते मायाभेदां तरन्ति ते । १४ ।  
माययापहवज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः । १५ ।  
आहितं नाभिजानाति मायैर्मयः परमव्ययम् १३ ।



تیتھ گیان حاصل پد، تھو کہ زانی اندر من  
سوی زان ناوتھ ام تہ کنے  
هق چھ پران نے ---- نے چھ بہانے

زن سوز و نس زونگ چھ نگان، لام لکن لام  
من وینہ نگان تاوہتین  
شولہ نرمان نے ---- نے چھ بہانے

ون سور گرتھتھ روز ہماہ، ترور بہتھ لوب  
تھتھ پانہ تھلان والہ توے  
اسہ گران نے ---- نے چھ بہانے

فانل! شریک ساز کنے، سوز مگر بیون  
گوپالہ! یوے لولہ ہتین  
منز چھ نران نے ---- نے چھ بہانے



उदात्तः सर्व एवैते ज्ञानी त्वारमेव मे मतम् ।  
आस्थितः सदियुक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् ॥

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यथो महं स च माम प्रियः १७  
त्युष ज्ञान हासिल सपदि बवस ज्ञान्य अन्दर मन  
सुय ज्ञान हाविथ मोइम तु कुनुय  
'ह' छे परान नय—नय छे बहानय ।  
जन सोजवनस जोग छु लगान लाम लूकन लाम  
मन वुहनि लगान ताव हत्यन  
शोल छटान नय—नय छि बहानय ।  
बन सूर गच्छित रोजि हेटा चूरि बिहिथ लेब  
तैथ्य पानु थलान वालि तवय  
आसि गरान नय—नय छि बहानय ।  
'फाजिल'! शरीरक साज कुनुय सोज मगर ब्योन  
गोपालु! योहय लोलु हत्यन  
मंजु छे सज्ञान नय—नय छे बहानय ।

नोट— ग्यान—ज्ञानकारी, प्रकल  
ह—ईश्वर, अल्लाह ।

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यथो महं स च माम प्रियः १७  
नित्ययुक्त एकभक्तिविशिष्यते ।  
तेषां ज्ञानी  
ज्ञानी च भरतर्षभ १६  
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी





مہ چھانکارا ماتا! کیا نہ پتر ہاتھم

مہ لے گوی گاؤ ماتا سستی ہر دم

دو پتھ دودھ ماسہ چوتھم تروڑ ٹوکے

ہتے پوڑ پوڑ تے ملے تے تہ ٹوکے

دودھ کوڑی چیتھ تہ روزم کل مہ اتھن

یوہے گوٹھانہ ووتھ بھگوانہ سند دین

نجاتہ اوتار چھینہ اپرہکان ووتھ یمن یمن کتھ تہ کامین منز چھ شوزہ آسان

۱۹۔ جنم پتر جنم لے کے گئی تھی فی ضرورت اس پر پونہ جائے اس پر کو مہیہ حضور



तं तं निधममाख्याय प्रकृत्या निधाताः खया ॥

जो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धया चितुमिच्छति ।

तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥



## पेज अवतार

मैं छा इन्कार माता! क्याजि प्रलुथम  
मैं लय गोय गांव मातायि सूत्य हरदम ।

दोपुथ दुद मा सां बोधम चूरि चूरे  
हतय पेज बोजतय मलरे तु दूरे ।

दुदुकय नंटय चय ति रुजुम कल म्य मय कुन  
योहय गव ठानु बोध भगवानु सुन्द द्युन ।

प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।

कामैस्तस्तेर्हितज्ञानाः ।

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः । १९ ।

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।



پندر گو سر یہ چھا پوشیدہ روزان  
کرتش پوز و نہ چھا نہ نہ کانسہ کھوڑان؟

بہج پندریچ نہ روزان و انسہ پابند  
لوکٹ بالک امی کوڑمٹ عقلمند



پہ دھرتی گاؤ ماما پیٹھ چھ تلوشان  
دوان دود تھنی کُرشن اہر بناوان

کھپوان شخص امریت کو نٹو دامہ چاوان  
اُمس جگ ایشور پدوی چھ دیاوان



अव्यक्तं व्यक्तमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः । परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥२४॥



पजर गव सिरियि छा पूशीद् रोजान  
कृष्ण पौज वननु छा जांह कौसि खोचान ?  
नहेज पजरुच न रोजान वीसि पाबंद  
लुकुट बालुक प्रमी कोरमुत अकलमंद ।  
यि धरती गांव माता प्यठ छि तोशान,  
दिवान दुद, थन्य, कृष्ण माखुर बनावान ।  
हयवान थन्य अमृतक्य नट्य दाम् चावान  
अमिस जग हँवर पदवी छु शिवान ।

स तथा श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।

लभते च ततः कामान्मयैव विहितानि तान् ॥ अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।



کرشن اکھ بالکا پندرک مجسم  
فخر زگش یو ہے اوتار۔ آدم

کرشن بتر اثر پیچھ صلج علامتھ  
یو ہے اکھ پوشونی امیج کرمتھ



کرشن گو یس چھ موہ لی منزسہ الہام  
یہیک اکھ اکھ صد لوکن چھ پاغام

کرشن گو ظلمہ ایوان سو گلرے  
یہیک دولاہ اپنرس تالہ تر کرے

کرشن گو مقصدک نردیک منزل  
امس نش سار نے حاصل کئے دل



इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत ।  
सर्वानि संमोहं सर्गेयानि परंतप ॥२७॥



कृष्ण अख बालुका पञ्जरुक मुजस्सम  
फक्कुर जगतस योहय अवतार आदम ।

कृष्ण वुतरांच प्पठ सुलहुच करामत,  
योहय अख पोशिवन्थ अमनुच अजामत ।

कृष्ण गव यस छु मुरली मंज सु इलहाम,  
यंभ्युक अख अख सदा लूकन छु पंगाम ।

कृष्ण गव जुलमु अयवानन सु बगराय  
येभ्युक दंसलाबु अपजिस तालि तंचु काय ।

कृष्ण गव मकसदुक नजदीक मंजिल  
अमिस निश सारिनुय हांसिल कुनुय दिला

मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् २५ वेदाहं सप्ततीतानि वर्तमानानि चार्जुन ।

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।



کرشن گو دوں سمت گرتھنک سمندر  
 اوتھہ و اتھہ بنان پرتھہ قطر اگر  
 کرشن گو یکدلی ہند اکھ سہ اگر  
 وزان پتھہ نش چھ ندھہ موتاں تے سر  
 کرشن گیتا یہ ہند کہتے منہج اش  
 گن، تار پکین منز سر یہ پراکش  
 کرشن گو اکھ پوستر روپ پریمک  
 تصور دل پسند سوندر شریک  
 کرشن گو زلزلہ کرو دس تہ کاس  
 سہ خالص سون کران کم مایہ تر اس  
 کرشن ہر دج چھ پنر اہینہ دہری  
 اہنکار س بنان وان انکساری

کہ کرشن گو دوں سمت گرتھنک سمندر  
 اوتھہ و اتھہ بنان پرتھہ قطر اگر  
 کرشن گو یکدلی ہند اکھ سہ اگر  
 وزان پتھہ نش چھ ندھہ موتاں تے سر  
 کرشن گیتا یہ ہند کہتے منہج اش  
 گن، تار پکین منز سر یہ پراکش  
 کرشن گو اکھ پوستر روپ پریمک  
 تصور دل پسند سوندر شریک  
 کرشن گو زلزلہ کرو دس تہ کاس  
 سہ خالص سون کران کم مایہ تر اس  
 کرشن ہر دج چھ پنر اہینہ دہری  
 اہنکار س بنان وان انکساری

وہ انسان بھلے جن کے اعمال ہیں انہیں گناہوں سے عوامی طور پر غلامی ہے



साधिमताधिदैवं मां साधियत्रं च ये विदुः । प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्मुक्तचेतसः । ३० ।

कृष्ण गव दुन समुत गछनुक समन्दर  
प्रोतथ वातिथ बनान हर कतर सागर ।

कृष्ण गव यकदिली हुंद अख सु आगुर  
वुजान यथ निश छु मदमोत ताल तय सुर ।

कृष्ण गीतायि हुंद गाह तय मनुच आश  
गटन तारीकियन मंजु सिरियि प्रगाश ।

कृष्ण गव अख पवितर रूप प्रेयमुक  
तस्सब्बुर दिलरुबा सोंदर शरीरुक ।

कृष्ण गव जलजला कूधस तु कामस  
पु खालिस सुन करान कम मायि त्रामस ।

कृष्ण हृदयिच छु पंज आईनु दोरी  
अहंकारस बनावान इन्कसोरी ।

ते ब्रह्म तद्विदुः कृष्णमव्याप्तं कम चाखिलम् ॥ ३० ॥  
मामाश्रित्य यतन्ति ये ।  
जराभरणमोक्षाय  
ते ब्रह्ममोहनिमुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।



کرشن گو تھن دوہج مانے شہل سرہیہ  
 موہن لوہن کئی برہنہ زالوہی رہیہ  
 کرشن گو پوشون گنگاپہ ہند جل  
 چھلان ہتہس مسلمانس دلک مل  
 کرشن گو فکر تارن وانسہ ہند ویتہ  
 سہ چھا اکو سندہ سہ گو پرتھ کانسہ ویتہ  
 کرشن گو استما ست استما بس  
 تمہس سولے چھ حاصل دے یہ گویس

۱۔ مانے = محبت ۲۔ برہنہ = شولہ (شعلہ) ۳۔ موہ = بھولے ہوئے  
 ۴۔ طمع ۵۔ ویرہ = جادو ۶۔ ست = دایمی پندرہ ۷۔ دے = بہران  
 شری بھگوان کا ارشاد کسواں ادھائے



नो सामजमनादि न वेति लोकमहेश्वरम् ।

असंमूढः स मर्येव सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥३॥

अहमादि हि देवानां महर्षीणां च सर्वेषु ॥२॥

अहर्षयः । प्रभवं न महर्षयः । सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः । न मे विदुः । वत्सेन्द प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥१॥

कृष्ण गव धन्य दुदुच मालय शहुल सोह  
मुहस लबस कुनो ब्रह्म जालुवन्य रेह ।

कृष्ण गव पोशवन गंगायि हुन्द जल  
छलान हे दिस मुसलमानस बिलुक मल ।

कृष्ण गव फिकिरि तारुन बांसिहुन्द व्युच  
मु छा अक्यसुन्द ? सु गव प्रयकांसि हुन्द व्युच ।

कृष्ण गव आत्मा सत आत्मा बस  
तमिस सोरुय छु हासिल दययि गव यस ।

महासागर कृष्ण यिम दिल बनावान  
तिमय तस मंज गवनुक्य दुरदानु छारान ॥  
तलाशिय मर नु ज्ञानुक्य जीठ्य मंजिल  
शऊरुक्य ला शऊरुक्य तिम बसावान ॥

महा सागर कृष्ण यिम दिल बनावान ।  
तिमय तस मंज गवनुक्य दुरदानु छारान ॥  
तलाशिय मर नु ज्ञानुक्य जीठ्य मंजिल  
शऊरुक्य ला शऊरुक्य तिम बसावान ॥

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले,

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।







महर्षयः सप्त पूर्व चत्वारो मनवस्तथा ।

मन्त्रावा मानसा जाता येषां लोक इसाः प्रजाः॥



नय छे गछान

हे नय छे गछान, शोलु वुहान, नार हसा नार !  
 रेह चैनवन्यन कृष्ण चैकुन  
 लार हसा लार !

लाहूत प्यठुच जूच छे करान कुनिरु कंगस तूर,  
 आकाशि प्यठुक सिरियि त्रै निश  
 जार हसा जार !

नोट:-

१ लाहूत - तस्सबुफक थोद मुकाम २ कोहि तूर ।

दिल पानुब्रमान क्या छे दुई कथ छि वनान वैर  
 यिम चानि नैहजे पकय त सपुद्य  
 यार हसा यार !

बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।

यथोऽयशः  
 दानं तुष्टिस्तपो समता अहिंसा  
 च॥४॥  
 भावो भयं चाभयमेव च॥४॥  
 सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च॥४॥

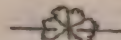


گوپالہ ! یترھا کہ آہ پلس آب کر کہ آب  
اکھ تہہ تہہ دو دس تو کھرنگان  
دار ہسہ دار

پم چانہ کلے پھٹی تہہ چنی کہ و پتھ تہہ پیدی و پتھ  
تم قلزم من تری تار مو شا کہ  
تار ہسہ تار

دھن مار تولہ : کینہ مگر من چھ گنجک نیاس  
یس مار تہہ پتھ ، تس نہ کینج  
مار ہسہ مار

مار تھ تہہ زیو انم ، کرشنہ لو بم من مہ سرفراہ  
اتھ پریمہ پینجے پیٹھ مہ گندم  
زار ہسہ زار









لچھ والنسہ گڑھتھ کرشننہ تہ مایکھ تہ مہکھ دل

اتھ زخمیہ پھر س تہ یہیہ چھ لگان

پیارہ نسہ پیار

کلاؤ ہنہ دکھ تہ گے پھر تہ مہ کن نین ! ہین اچھ

یو دتیر نظر دکھ تہ دپے

مالہ نسہ مار

کرشنا ! مہہ دیتھم سوزنتے نے مہہ دلس زدی

چھس دوہن ہن پٹھ پٹھ ونک توکھ

دارہ نسہ دارہ

دارہ = دودارہ

مورلی چھ ند - مافنڑ نے - شہ چھ امیک زو - فرسہ

روح بالہ کرشنن ، فاضلنیم

شارہ نسہ شارہ



परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् ।

शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विशुभम् ॥ १२ ॥

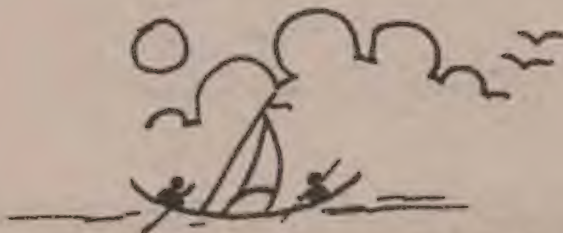
अर्जुन उवाच ॥ नारायणाय नमः ॥

लख वांसु गच्छिथ कृष्ण च मा यिख त् मुहकमन  
अथ जन्म फिरिस च्युह छु लगान  
प्यार हसा प्यार ।

कुमलाव हना वुठ त् गहे फिर त् मैकुन नैन  
योद तीरि नजर दिख त् दपय  
मार हसा मार ।

कृष्णा मे द्यु तथम सोज नतय नय म्य दिलस जे द्य  
छस दोन शहन प्यठ पथ वनुक  
होख दार हसा दार ।

मोरली छु निदा, हातफुन्य लय, शह छु अम्युक जुव  
रुह बाल कृष्ण, फाजिलन्य यिम  
शार हसा शार ।



तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।

तमः ॥ तेषामेवानुक्रम्यार्थमहमज्ञानजं ॥ १० ॥ ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥ १० ॥



## مورلی تہ مورلی درد

کُرتشہ مورلی پسکر سوز و گداز  
دلربا، دلکش، مودرتے دلنواز  
لے ایچ عرفاں تہ شہ قدسی صفا  
پانہ مورلی درد چھ سرتا پانج سار

## میشرونے

میشرونے پیرانہ سمیچ بانسری زان  
بہانہ، گوتھ و مچھن نے کس چھوایان  
شریک سوز لافانی شہس تا  
شہک ساک کُرتشہ اوتار انسان



न हि ते मग्नान्मयि विदुः न तान्मा ॥

## मोरलीदर

कृष्ण मोरली पैकरे सोजो गुदाज,  
दिलरुबा, दिलकश, सोन्दर तय दिलनवाज ।  
लय अमिच इरफान त शह कुदसी सिफात  
पान मोरलीदर छु सर ता पा मजाज ॥

नोट :-

- १ पैकर—कालब, जिसम = मुजसम
- २ कुदसीसिफात—रूहानी गोण थवन बोल
- ३ मोरलीदर—मरली बोल, कृष्ण जो ।

## मेचिव नय

मेचिव नय प्रानि वक्तुच बांसुरी जान  
बहानय, गोछ वुछुन, नय कुस छु वायान  
शरीरुक सोज लाफानी शहस ताम  
शुहुक मालिक कृष्ण अवतार इन्सान ॥

नोट:-

- १ नय—मोरली

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ॥

भूतमायन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥१५॥

असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥

सर्वमेतद्वत् मन्ये यन्मां वदसि केशव ।

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिनारदस्तथा ।





کرشن بالسی پتھ بڑتھ سیجر زن اتھ  
 یہ مستی تہ فرہتھ چھ زن بوزونی چیتھ  
 یہ سنگیت چیتھ آئے کرشنا  
 یہ مودرلی نمودر مائے کرشنا  
 نرنگتس یہ نئے وائے  
 کرشنا کرشنا



विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन ।  
भूयः कथय तस्मिन् हि भृङ्गतां नास्ति मेऽमृतम् ॥

ترکھ تر شوق سان رُمس رُمس اگر کُشن کرکھ  
ترکھ تر مرنہ بر و نہ توے نسہ تر نہ مرنہ  
چھ تر نہ پھری لگاں تمن من مشد کر شاں بین  
ترکھ تر بوسرس اگر کُشن کُشن کرکھ

चुंशोकं सान रुस रुस अगर कृष्ण गरख  
मरख च मरन ब्रोहे-तवय नसां चुजां ह मरख  
छिजनमं फिर्य लगान तिमन मशिद गह्वान यियन  
तरख चु बससरस अगर कृष्ण कृष्ण करख।

कृष्ण बान्सुरी हाथ बरिथ सेहर ज़न अथ  
यि मस्ती तु फरहथ छि ज़न बोज़वुन्य चथ  
यि संगीत चथ आय कृष्णा !  
यि मोरली मोदर माय कृष्णा !  
च ज़गतस यि नय वाय , कृष्णा कृष्णा !

कथं विद्यामहं योगिस्त्वां सदा परिचिन्तयन् ।  
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य सिद्धसि

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।



یہ لے زن منس نامہ دزان زن زندن دار  
کران رُح چھ بیدار یہ یس لوگ مسہ مشیار  
تیس کینہ نہ پرواے کرشنا!  
یہ مہرلی کرشمہ کرے کرشنا!  
منس کینہ نہ پرواے  
کرشنا کرشنا

یہ لے بوزنگ مہس دوان الیشور یس  
سہ یوگس اندر مس کران ششہاس  
تیس نش بڈرہ درے کرشنا!  
یہ مہرلی چھ بڈشے کرشنا!  
ہیسچ وٹھ چھ سینیترے  
کرشنا کرشنا



मरीचिर्मरुतामसि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥

। आदिनामानामहं विष्णुर्विष्णुं विष्णुं विष्णुं ॥२०॥

यि लय ज़न मनस नार दज़ान ज़न चंदन दार  
करान दिल छु बेदार यि यस लोंग सु हुशियार

तमिस कैह न परवाय कृष्णा !  
यि मोरली ग़ेशम क्राय कृष्णा !

मनस कैह न परवाय, कृष्णा कृष्णा !

अहमादिष मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥२०॥

यि लय बोज़नुक ह्यस दिवान ईश्वर यस

सु यूगस अन्दर मस करान शशजहातस  
तमिस निश रुचर द्राय कृष्णा !

यि मोरली छे <sup>बड</sup> शाय कृष्णा !  
ह्यसच वथ छे स्यज़ त्राय, कृष्णा-कृष्णा !

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।

प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥



یہ لے پھر گوشن تہ لُج لام پوشن  
 چھ بلبُل تہ گوشن حقیقت چھ گوشن  
 یہ مودلی چھ بے رُہا کُشنا  
 یہ مودلی چھ یکتا کُشنا  
 یہ بے رنگ بے رُہا  
 کُشنا کُشنا

دھرم، کُربے تہ انسان سبٹھاہ تو سبٹھاہ جان  
 یہ ساری چھ مانان چھ منزل سہ بھگوان  
 چھ گپتا تہ ہمارے کُشنا  
 یہ مودلی اثر بے پوزاے کُشنا  
 سنے سور ہمارے  
 کُشنا کُشنا



नोट : १ गोशन-तरफातन २ यकताथ - समुन  
करन वाजन ३ बेरंग-बे इमति याज



धर्म, कय त इन्सान स्यठा रत्य, स्यठा जान  
यि सोरो छि मानान छु मंजिल सु भगवान  
हे गोता ति हमराय कृष्णा !  
यि मोरलीं जे पौज, भाय कृष्णा !  
समय सोर हमराय, कृष्णा कृष्णा !

पेदानां सामवेदोऽसि देवानामसि वासवः ।

पन्द्रियाणां मनश्चासि भूतानामसि चेतना ॥ रुद्राणां शंकरश्चासि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ।



نئے لے چھ یکسان کنی ہندو مسلمان  
 چھ رحمان بھگوان چھ بھگوان رحمان  
 دُپنی ہنسن نہ کہنہ رے کرشنا  
 یہ موہری چھ بے نیاے کرشنا  
 چھ یکسان بے نیاے  
 کرشنا کرشنا

حفاظت پشن ہنر چھ وٹھ مرسلن ہنر  
 گہے موہمن ہنر گہے عیسمن ہنر  
 گپالا نہ تھز بے کرشنا  
 یہ موہری دیچ جائے کرشنا  
 تہہ نشیم سمٹھ آے  
 کرشنا کرشنا



उन्वेः श्रवसमश्वानां विद्धि माममुतोद्भवम् ।  
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥

॥ : लुहि लुहि क लुहि लुहि : लुहि लुहि लुहि लुहि

नये लय छे यकसान कुनो हेन्च मुसलमान  
छु रहमान भगवान, छु भगवान रहमान ।  
दुई हंज नु कांह राय कृष्णा !  
यि भुरलो छे बे न्याय कृष्णा !  
छु यकसान बे न्याय कृष्णा कृष्णा !

नोट:- १. दुई - बर २. बेन्याय - न्याय रोम



हिफा जत पशन हंज छे वय मोरसनन हंज  
गहे मूसहन हंज गहे ईसहन हंज  
गुपाला जे थंज जाय कृष्णा !  
जे निज समिथ यिम आय, कृष्णा कृष्णा !

नोट :- पुण - हयवान, २ मारसल - दरजस मंज  
प'गमवरस खसिथ

गङ्गानां निचयः शिवः ॥ अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ॥  
गङ्गानां जयश्रीः स्थवराणां हिमालयः ॥

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्येकमक्षरम् ।



ترچھا کہ تھو ترچھا کہ تھو ترچھا کہ ماچھ ہو تھو  
 یہ تھو سو رہ گئی کو اُڑی نقش اتھ چھ ہو  
 چھ کیو پڑ تہ سرسے کرشنا  
 یہ مہر لی چھ سرسے کرشنا  
 حسین تر دہرے  
 کرشنا کرشنا

کرشن جی اثر چھ جے کُنہ شہ، کُنہ پے  
 کُنہ نے، کُنہ نے بیٹھی وہ ترھانے  
 پے گون ترہ نش درے کرشنا  
 یہ مہر لی! ترہ نش زے کرشنا  
 ترہ جے جے! ترہ لوگ آے  
 کرشنا کرشنا



द्युतं

छलयतामसि

तेजस्तेजस्विनामहम् ।

जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्यं सत्त्वतामहम् ॥



च छुल यन्य, च छुल यन्य, च छुल माछ ह्यु व यन्य  
 यि यन्य मुरगु कम्य यन्य, नकुश यथ छि बन्ध बन्ध,  
 छु बयूपिडं ति सिरसाय कृष्णा !  
 यि मुरली छि सुसराय कृष्णा !  
 हसोनन च दुबराय, कृष्णा कृष्णा !

कृष्ण जी त्वे छुय जय, कुनुय सह कुनुय पय,  
 कुनी नय, कुनी लय, यिथी विहय यछान दय,  
 यिमब गुन त्वे निश द्राय कृष्णा !  
 यि मुरली ! त्वे यज जाय कृष्णा !  
 त्वे जय जय, त्वे लेन प्राय कृष्णा कृष्णा !

कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।

मृत्युः सर्वहस्त्राहमुद्रवश्च भविष्यताम् ।





گلن ہند ترنم ہند تھنم تھنم  
 چھ موہری موہری سوٹھ گفٹار گفٹار  
 وزن شبنم، جلت رنگ تار کن ہند  
 یہ موہری سراپا چھ سیتا سیتا  
 دلچ پوشوئی لے مہیچ زندہ سوار  
 یمن منز چھ پوشیدہ اسرار اسرار

میں ہر شے میں ہوں واسد لوے میری قیاس میں کیا اندوے ارجن اس میں



कृष्णपि सवभूतानां बीजं तदहमर्जुन ।

न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥



गुलन हुंद तरनुम थरघन हुंद तक्कलुम,  
छे मुरली मुदुर म्पूठ गुफ्तार गुफ्तार ।

वजुन शबनमुक, जलतरंग तारुकन हुंद,  
यि मुरली सरापा छे सेतार सेतार ।

दिलुच पोशु वन्य लय मनुच जिन्दु आवाज़  
यिमेन मंजु छि पूशीदु असरार असरार ।

ग्यव, दूद, तु गुरुस क्याजि चि अंदेश करिथ चोथ,  
भगवान् । यहूंद बागि बेरुत शेहजार लुकन वोत ।  
जुव मंगतु जिगर मंगतु, चू रह मंगतु दिलो जान,  
मीसूम । लगय क्याजि असो जूरि मक्खन ख्योथ ॥

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः ।

मूर्ते वैरागि गृहानां शानं शानतवमहम् ॥ मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुग्रना कविः ॥ दण्डो दमयतामसि नीतिरसि जिगीषताम् ।





بالہ کشتن یام دژنم آگہی  
 پاؤ گو ہر دس مہ ذوق بندلی  
 بانسری ہندشہ چھ پیریمک اتما  
 بانسری ہنرے چھ ساز و لہری  
 بوز و فی دوپ نے خودی ہند روپ نگ  
 اتھ خودی پیٹھ چھ فدا لچھ بے خودی  
 وچھ امی موملی حقیقت واش کوڈ  
 کوڈ امی ظاہر نہ آوار گو نبی  
 نیکدلی منز کر و بیان سورخ و سفید  
 فاضلا! مومرلی پنن رنگ قودرتی



अथवा

बहुनेतेन

किं

ज्ञातेन

तवार्जुन ।

विष्टभ्याहमिदं

कृतमेकांशेन

स्थितो जगत् ॥

॥

## बाँसुरी

बालकृष्णन याम दिचनम आगंही<sup>१</sup>

पाव<sup>२</sup> गव हृदयस<sup>३</sup> म्य जोके<sup>४</sup> बंदगी ।

बाँसुरी हुंद शह छु प्रेमुक आत्मा

बाँसुरी हुंज लय छै साजे दिलबरी ।

बोजुन्य दोप नय "खोदी" हुंद रूप रंग

अथ खोदी प्यठ छय फिदा लछ "बेखोदी"

बुछ अमी मोरली हकीकज वाश कोड

कोर अमी जाहिर जि अवतार गव नबी,

यकदिली<sup>१</sup> मंज कर व्यपान सुरखो सफेद

"फाजिला" मोरली पनुन रंग कुदरती

नोट : 1. जाग्रती, हस 2. दिलस, 3. शोक

4. दिशर

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप ।

बा ।

श्रीमदूर्जितमेव

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं

॥४०॥

एष तदेकतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरं मया ॥४०॥





بے خبر یا پھو کر شبنہ لالہ گورنس  
 مرتب منتر ہیر ہیر ہیر کھورنس  
 اتھ اندر میانین اتھن منتر اوس کیاہ  
 واو مالین منتر بہ سودر تورنس م ساگر

شعورس لا شعورس منتر کرشن آم  
 وچھم زن سیرہ، لیکن رنگ سیا فام  
 سہ یا منترہ درشنک بر وچھ تر وان  
 وچھان تس گوپین سیتو ایشور تام

گیانی کو جب عرفان باری حاصل ہو جاتا ہے تو اس کے لئے ہر طرف ایسا ہی پریمانا کا



एवमेवद्वयान् त्वमात्मानं परमेश्वर



वेखबर पा'ठ्य कृष्णु लालन गोरनस,  
मरतबस मंजु हेरि ह्यो'र 'ह्यो'र खोरनस।  
अथ अन्दर म्यान्थन अथन मंजु प्रोस क्याह,  
वावु हाल्यन मंजु ब' सो'दरस तोरनस।

शऊरस लाशऊरस मंज कृष्ण ग्राम,  
बुछुम जन सिरियि नेकिन रंगु सियाह फाम।  
सु यामथ दर्शनक्य बर वंध्य छु ब्रावान,  
बुछान तस गुपियन सत्य ईश्वर ताम।

अर्जुन उवाच

मदनप्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ।

गन्तव्योक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥१॥ भवाप्ययो हि भूतानां श्रुतौ विस्तरश्चो मया

三





سن جے لہا

دلن گو دین و دھرمک سہرو کم  
چھ اوگون پھانپھلاوان ابن آدم  
تہیکھ اوتار سنت یوگ پھر واپس  
اوسے کنی پیارنچ کل آسہ ہتر چھم

۱۔ اوگون = بدصفت ۲۔ ابن آدم = انسان ۳۔ اوتار ہیون = پتہ زون



विस्मय मयं न चोक्तं विमलमयः ॥४४॥

सुखे रथे रथे ! कृष्ण छुय सुख्य पानस  
सुमोलिथ पजरकिस जरस जरातस ।  
जहांनस सोरि सथ याम तार लबनुच,  
नजातचि रज करिथ लाग्यस किनारस ।

सही वथ रठ ! कृष्ण छुय सुख्य पानस  
सुमोलिथ पजरकिस जरस जरातस ।  
जहांनस सोरि सथ याम तार लबनुच,  
नजातचि रज करिथ लाग्यस किनारस ।

संजय उवाच

दिलन गव दीनु धर्मुक आविरु कम,  
छु अवगोन फाफुलावान इब्नि आदम ।  
चु हाख अवतार सतयोग फेरि वापस,  
अवय किन्य प्रारुनुच कल आशिहचुछम ॥

अवगोण—बदसिफत, :— काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार  
याने शहवथ, चख, मालय, तमाह त गुरुर

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः

एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ॥४५॥





یا منہ یہ آدم دین و دھرمک پڑا یہ سمنار  
 گیتا چھ شلہ کرشنہ گوپال سپد نمودار  
 تس سپد بے دینن ادھرم تے یچھن ستو جنگ  
 میتر خاک سپدن چھیکر س ظالم تہ خطا کار

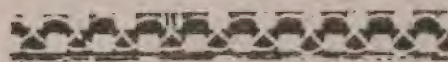


गान्धीय संसारे कलाकृत्येन परिहृत्यते

# गीता

कर्मचिन् जे अर्जनस असरार बावान,  
 तिमन हुंदु आनु गीता गोशरावान ।  
 श्लोक नाबद तु इलहामी शब्दकंद,  
 परनवालिस छि अमृत दाम् चावान ॥

कृष्ण जी अर्जनस असरार बावान,  
 तिमन हुंदु आनु गीता गोशरावान ।  
 श्लोक नाबद तु इलहामी शब्दकंद,  
 परनवालिस छि अमृत दाम् चावान ॥



यामत यि आदम धर्मबुद्धीनुक प्राटि यि संसार,  
 गोता छि शहिद, कृष्ण गुपाल सपदि नमूदार ।  
 तस सपदि बे दीनन, अधर्मन तय यछन सूत्य जंग,  
 मेच खाक सपदन छेकरस बेदीन तु खताकार ।

सीदन्ति मन गात्राणि मुलं च परिशुष्यति । वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥२९॥

न च शक्रोऽप्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥





یام دھرتی پیٹھ سید مندیانہ عام  
 تر کر مندی پاٹھی ٹنڈنہ پا کور و تسمام  
 ست نمودار گو است کو فود گو  
 کور سری کرشنن صبحی سمیک نظام

ہماری ادھر فوج ہے بے شمار کمان دار بھیشم سنا علی وقار  
 ۱۰۰





याम दरती प्यठ सपुद मुदियानु याम,  
 चक्रि हिदु पाठय नचनि लेग्य कोरव तमाम।  
 सत नमूदार गव असथ काफूर गव,  
 कोर श्रीकृष्णन सही समयुक निजाम ॥





چھ بھگون ناسہ تر اسن پنج گالان ۔ دغا بازن چھ موتک پیالہ چاوان  
 گٹن منن بچا لو ان جیون اچھ من  
 سہ دین دار : حق پرستن تار تاران

ॐ भगवान नासुत्रासन बेख जालान ।  
 वगाबाजन ॐ मोतुक प्यालु चावान ॥  
 घटन मन्त्र फाटवान जीवन अध्रमन ।  
 सुदीन्दार : हक परसतन तारु तारान ॥





ستمگارو ستم کوڑیاڈی پانس  
 مہا بھارت پھرن روڈیر تھنہ  
 تلو پیرج علم یوڈر نوڑ قاسیم  
 سبق دیت کرشنہ اوتارن جہانس

सितम गारव सितम कौर पाण्य पनस ।  
 महाभारत फिरन रुद प्रथ जमानस ॥  
 तुलिव पजरुच्य अलम, पो'ज रोजि कोइम  
 सबख द्युता कृष्ण अवतारन जहानस ॥



# کرشن کہانی

راجہ درلودھن کی گفتگو

اگرستین اور دیوگ دو بھائی تھے۔ اگرستین منتھرا کے راجہ تھے۔ دیوگ ایک کنیا تھی۔ اُس کا بھائی کنس تھا۔ کنس بہن کے ناطے دیوگ کو بے حد پیار کرتا تھا۔ دیوگ کی بالغ ہوئی دیکھ کر بہمہ صفت موصوف شوریسین کے بیٹے واسد کو کے ساتھ بیاہی گئی۔ کنس کو دیوگ کی شادی سے بے حد خوشی ہوئی۔ اُس نے دیوگ کو جہیز میں کافی دھن دیا۔ اور بے حد خوشی کے ساتھ بہن کو الوداع کر رہا تھا کہ آسمان سے آواز آئی کہ ہے راجہ کنس! جس بہن کو تو اتنا پیار کرتا ہے اُس کا آٹھواں بیٹا تمہارا قاتل ہو گا۔ جب کنس نے ایسا سنا تو حیران رہ گیا کہ یہ میں نے کیا سنا۔ اچانک پھر یہی آواز آئی۔ کنس کو بہت غصہ آیا اور قہر کیا کہ دیوگ کے بطن میں ہی اس کے آٹھویں بیٹے کو مار دیا جائے وہ اس طرح کہ جہیز لینے سے پہلے ہی اُس کی ماں دیوگ کو موت کے آٹھواں اس کا بیٹا اُس کے بطن میں سر جائے۔ وقت آنے پر کنس دیوگ کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے تلوار

پہلا ادھیائے۔ دھرت رات نے کہا۔

اگرستین اور دیوگ دو بھائی تھے۔ اگرستین منتھرا کے راجہ تھے۔ دیوگ ایک کنیا تھی۔ اُس کا بھائی کنس تھا۔ کنس بہن کے ناطے دیوگ کو بے حد پیار کرتا تھا۔ دیوگ کی بالغ ہوئی دیکھ کر بہمہ صفت موصوف شوریسین کے بیٹے واسد کو کے ساتھ بیاہی گئی۔ کنس کو دیوگ کی شادی سے بے حد خوشی ہوئی۔ اُس نے دیوگ کو جہیز میں کافی دھن دیا۔ اور بے حد خوشی کے ساتھ بہن کو الوداع کر رہا تھا کہ آسمان سے آواز آئی کہ ہے راجہ کنس! جس بہن کو تو اتنا پیار کرتا ہے اُس کا آٹھواں بیٹا تمہارا قاتل ہو گا۔ جب کنس نے ایسا سنا تو حیران رہ گیا کہ یہ میں نے کیا سنا۔ اچانک پھر یہی آواز آئی۔ کنس کو بہت غصہ آیا اور قہر کیا کہ دیوگ کے بطن میں ہی اس کے آٹھویں بیٹے کو مار دیا جائے وہ اس طرح کہ جہیز لینے سے پہلے ہی اُس کی ماں دیوگ کو موت کے آٹھواں اس کا بیٹا اُس کے بطن میں سر جائے۔ وقت آنے پر کنس دیوگ کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے تلوار پہلا ادھیائے۔ دھرت رات نے کہا۔



॥२॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥२॥

## \* कृष्ण कहानी \*

लेखक

मानस-किंकर कौशलकिशोर दास

उग्रसेन और देवक दो भाई थे। उग्रसेन मथुरा के राजा थे। उनका पुत्र कंस था। देवकी देवक की कन्या थी। छोटी बहिन होने के नाते कंस देवकी को अत्यन्त स्नेह करता था। देवकी को विवाह योग्य हुई देखकर सर्व-गुण सम्पन्न शूरसेन के पुत्र वसुदेव के साथ देवकी का विवाह स्थापित कर दिया। कंस को देवकी के विवाह की अत्यन्त खुशी थी उसने देवकी को दहेज में बहुत धन दिया और अधिक स्नेह होने के कारण कंस देवकी को स्वयं रथ में बैठा कर विदा करने गया। जिस समय कंस देवकी को विदा कर रहा था उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे ! राजा कंस जिस बहिन को तू इतना स्नेह करता है उसी का आठवाँ पुत्र तेरा काल होगा। जब कंस ने इस प्रकार सुना तो वह आश्चर्य में पड़ गया कि यह क्या कहा। तो फिर वही आकाशवाणी पुनः हुई सुनकर कंस को बड़ा क्रोध आया तब कंस ने सोचा कि इसके गर्भ से ही वह आठवाँ पुत्र जन्म लेगा, अतः इसी को मार दूँ जब ये ही नहीं रहेगी तो फिर पुत्र कहाँ से होगा। ऐसा सोच कर

धृतराष्ट्र उवाच।

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।

संजय उवाच।

॥१॥ पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा।

मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥२॥

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्।  
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण सर्वं शिष्येण धीमता ॥३॥





## کرشن مہاراج کی ماما جی کو بھائی کُش قتل کرنے لگا۔

تاکہ اُس کا بیٹا اُس کے بطن میں ہی مَر جائے۔ وقت آنے پر کُش نے  
دلوکی کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے تلوار میاں سے نکالی۔  
جیسے ہی وہ اُسے مارنے لگا تو کُش نے اُس کا ماتھ پکڑا اور پر اٹھنا  
کی کہ دلوکی عورت ہے۔ صنف نازک ہے اور آپ کی بہن ہے اور  
شادی شدہ ہے۔ اس لئے آپ اس کو نہ ماریں۔ اس کے جو بیٹے  
ہوں گے ہم انہیں آپ کے حوالے کریں گے۔



युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमोज्ञश्च वीर्यवान् ।  
सौमद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥६॥

कंस ने देवकी के केश पकड़ कर उसको मारने के लिए तलवार ध्यान से निकाली । जैसे ही मारने को तैयार हुआ, वसुदेव ने कंस का हाथ पकड़ कर कंस से प्रार्थना की कि यह स्त्री है, भबला है, आपकी बहिन है, फिर नवविवाहिता है अतः आप इसको न मारें । इसके जो पुत्र होंगे उन्हें हम आपको सौंप देंगे । जब देवकी के



कंस बड़ा पापी था । उसकी दुष्टताकी सीमा नहीं थी । वह भोजवंशका कलङ्क ही था । आकाशवाणी सुनते ही उसने तलवार खींच ली और अपनी बहिनकी चोटी पकड़कर वह उसे मारनेके लिये तैयार हो गया ।

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।

वीर्यवान् । काशिराजश्च धृष्टकेतुश्चेकितानः ॥७॥ युधामन्युश्च द्रुपदश्च विराटश्च सुयुधानो



کرشن جی نے جنم لیا بھگوان نے اُن سے سنجی کے گھر کو کل پہنچنے کے لئے کہا۔ وہاں  
 اُن کے گھر ایک لڑکی پیدا ہوئی تھی جسے یہاں لانے کے لئے کہا گیا۔ واسد یو کے ہاتھوں  
 سے تھکڑیاں کھل گئیں اور دروازوں کے تالے بھی کھل گئے اور سب پرہ داروں  
 پر گہری نیند غالب آگئی۔ واسد یو نے کرشن کو ایک چھاج میں رکھ کر وہاں سے نکالا۔



کرشن لڑائی کو نکلے میں اہل خدا ناک جو کرشن اور بھیم میں وقت جنگ

کرشن جی نے جنم لیا بھگوان نے اُن سے سنجی کے گھر کو کل پہنچنے کے لئے کہا۔ وہاں اُن کے گھر ایک لڑکی پیدا ہوئی تھی جسے یہاں لانے کے لئے کہا گیا۔ واسد یو کے ہاتھوں سے تھکڑیاں کھل گئیں اور دروازوں کے تالے بھی کھل گئے اور سب پرہ داروں پر گہری نیند غالب آگئی۔ واسد یو نے کرشن کو ایک چھاج میں رکھ کر وہاں سے نکالا۔



को नींद भागई। प्रभु देवकी के सामने चतुर्भुजी रूप में प्रकट हुये। तब देवकी ने उनसे शिशु के रूप में बनने की प्रार्थना की और प्रभु छोटे बालक बन गए। भगवान ने उनसे कहा कि हमें गोकुल में नन्दजी के यहाँ पहुँचा दो और वहाँ उनके यहाँ कन्या उराए हुई है उसको यहाँ ले आओ। वसुदेव जी के हाथों में पड़ी बेड़ियाँ खुल गईं। समस्त द्वारों में पड़े ताले स्वयं खुल गए सब पहरेदार गहरी नींद में सो गये। जब श्रीकृष्ण को लेकर वसुदेव चले तो उस समय वर्षा बहुत जोरों से हो रही थी। इसलिये शेषनाग ने अपने फन-फँसकर भगवान के ऊपर छत्रछाया कर दी। उस समय यमुना का जल ऊपर तक बढ़ आया





واسد یو جی نے کرشن جی ہاراج کو دشمنوں کے چنگل سے پورے احتیاط  
 کے ساتھ نکالا اور سلامتی کے ساتھ جمنا جی کے کنارے پہنچ گیا۔  
 اسی دوران میں موسلا دھار بارش ہو رہی تھی اور جمنا میں کافی  
 پانی چڑھ گیا تھا اور دریا کو عبور کرنا ناممکن تھا۔ اتفاق سے  
 عین موقع پر شیش ناگ نمودار ہوا اور اپنا بھین بھیل کر بھگوان  
 کے اوپر چھتر سایہ کر دیا۔ بھگوان نے جمنا کے بہاؤ کا مزاج بھانپ  
 لیا اور آہستہ آہستہ چھاج سے اپنا پیر باہر نکالا اور اس طرح جمنا  
 کو اپنے پیر کو بوسہ دینے کا موقع فراہم کیا۔ جمنا جی نے اُن کے پیر  
 جوم لیے اور پرسن ہو گئے۔ تو فوراً واسد یو جی کو پار جانے دیا۔  
 واسد یو جی بھگوان کرشن کو لے کر گوکل پہنچ گئے۔ وہاں اُس  
 وقت سند جی کے گھر میں سب سو رہے تھے۔ واسد یو جی نے کافی  
 راز داری کے ساتھ کرشن جی کو ملتا جسودا جی کے پاس لے دیا اور  
 کنیا کو اٹھالیا اور متھرا آ کر دیو کی جی کو دے دی جیل خانے میں پہلے  
 ہی کی طرح تالے پڑ گئے۔ لڑکی کا روناس نہر تمام پہرے دار جاگ اٹھے۔ خبر  
 پاتے ہی کنس وہاں آیا۔ مگر بچے کو دیکھ کر معلوم ہوا کہ یہ لڑکی ہے۔

یہ مقدس گرو صاحب احترام، جنہاں کے دو جہنموں میں عالی مقام۔



अभ्युपगमा विकर्णश्च सोमदत्तिस्तथैव च ॥८॥



अन्ये च बहवः शरा मदर्थे रक्तजीविताः ।

नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥९॥

तब भगवान ने उनका भाव समझकर सूय से अपना पैर निकाल कर स्पर्श कराया । यमुना जी चरण स्पर्श कर प्रसन्न हो गई और उन्हें भाग दे दिया । वसुदेव जब गोकुल पहुँचे तो वहाँ नन्द जी के घर सब सो रहे थे । भवसर पाकर वसुदेव जी ने माता यशोदा जी के पास कृष्ण जी को लिटा दिया । कन्या को उठा लिया और मथुरा जाकर देवकी को दे दिया । कारागार में पहले की भाँति ताले पड़ गये । कन्या का रुदन सुनकर सब पहरेदार जाग गये । खबर पाते ही कंस वहाँ आया, कन्या को देखकर उसने सोचा ये तो कन्या

मवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिजयः ।

नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥१०॥

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ।



مگر کہا گیا تھا کہ یہ لڑکا ہوگا، لیکن تب ہی دیوتاؤں کی بابا کا وچار  
 آتے ہی جونہی کنیا کو زمین پر پٹکنے کے لئے اٹھایا وہ ماتھوں میں سے  
 نکل کر فضا میں اڑ گئی اور بولی، ارے راجہ کنس! تو مجھے کیسے مارتا  
 مجھے مارنے والا تو گوگل میں پیدا ہو چکا ہے۔ کنس نے دربار میں آکر  
 منتریوں کو یہ خبر سنائی، تو سب نے کہا کہ یہ تو ہمارے بائیں ہاتھ کا  
 کھیل ہے۔ ہم اس بالک کا پتہ لگا کر اس کا کام تمام کریں گے۔ تب کنس نے  
 بہت سے رکھشوں کو کرشن کے مارنے کے لئے گوگل بھیجا، لیکن وہ خود ہی  
 موت کا شکار ہو گئے جو بھی جاتا تھا اس کو واپس نہ آتے دیکھ کر کنس  
 نے پوتنا کو بلایا۔ اس نے کہا کہ گوگل میں جتنے بھی بچے ہیں، میں ان سب کو  
 کھا جاؤں گی۔ یہ سن کر کنس بہت خوش ہوا۔ پوتنا اپنے پستانوں میں  
 زہر بھر کر گوگل میں آئی اور وہاں سب بچوں کو کھا کر تند بھون میں آگئی  
 اور ایک بہت سُندر گوبی کا روپ بنا کر جسودا سے کہا کہ میں لالہ کی  
 مبارکباد دینے آئی ہوں اور کرشن جی کو اپنی گود میں لے لیا جسودا جی  
 گھر میں دوسرے کاموں میں لگ گئی۔ پوتنا نے زہر بھرے پستان کو  
 بھگوان کے منہ میں ڈالا۔ تب پر بھونے دودھ کے ساتھ اس کے



॥१४४॥ श्री कृष्णः प्रसन्नः ॥

संजनयन्तः

कुरुक्षेत्रः

पितामहः

सिंहनादं निनयोच्चैः शब्दं दध्मी प्रतापवान् ॥

है पुत्र बताया था किन्तु तभी देवताओं की माया का विचार आते ही ज्योंही कन्या को पृथ्वी पर पटकने के लिए उठाया वह हाथ में से आकाश में उड़ गई और बोली घरे ! राजा कंस तू मुझे काहे मारता है तेरे मारने वाला तो गोकुल में पैदा हो चुका है। कंस ने दरबार में आकर मन्त्रियों को यह समाचार सुनाया तो सब ने कहा यह तो हमारे बाएँ हाथ का खेल है हम उस बालक का पता लगा कर सभी काम तमाम कर देते हैं। तब कंस ने बहुत से निशाचरों को कृष्ण के मारने के लिए गोकुल भेजा, लेकिन वे स्वयं ही काल का आस बन गए। जा भी जाता उसको वापिस न आते देख कंस ने पूतना को बुलाया। उसने कहा ! गोकुल में जितने बच्चे हैं मैं सब को खाजाऊँगी। इससे कंस बहुत प्रसन्न हुआ। पूतना अपने स्तनों में विष लगा कर गोकुल में आई। वहाँ सब बच्चों को खाती जब नन्द भवन में आई तो बहुत सुन्दर गोपी का रूप बना लिया और यशोदा से कहा मैं साला की बधाई लेकर आई हूँ तथा कृष्ण जी को अपनी गोद में ले लिया। यशोदा जी गृह में अन्य कार्य में लग गई पूतना ने विष लिये स्तनों को भगवान के मुँह में डाला तब प्रभु ने दूध के साथ उसके प्राणों को भी पी

यथाभागमवस्थिताः

सर्वेपु

अयनेषु

॥१४४॥

मीमाभिरक्षितम् ॥१०॥

पर्याप्तं त्वदमेतेषां बलं

मीमाभिरक्षितम् ॥

॥

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं मीमाभिरक्षितम् ।





پرانوں کو بھی پی لیا

اس طرح شکستہ

بکاسر اور نرکاسر

وغیرہ بے شمار

راکشوں کا

خاتمہ کر دیا۔

بھگوان کرشن

پیدہ ہی کنس

کو بھی مار سکتے

تھے، لیکن ان

راکشوں کو بھی

بھگوان کرشن پوتن کے پران پوس رہے ہیں

مارنا تھا، اس لئے کہ کنس انہیں وٹاں بھیجتا تھا اور پر بھوجی انہیں آسانی  
اور کھیل کھیل میں مارتے تھے۔

بھگوان کرشن کی ماکھن لیلیا میں بھی سیاست کار فرما تھی،

کیونکہ برج کے علاقہ سے سب ماکھن غارتیا بھیجا جاتا تھا۔ بھگوان نے

جنگ کی سورش



मायवः पाण्डवश्चैव दिव्या भिक्षां प्रदत्तः ॥



लिया। इस प्रकार शकटासुर, बकासुर, नरकासुर इत्यादि अनेक राक्षसों का संहार किया। भगवान् कंस को भी पहले ही मार सकते थे लेकिन इन राक्षसों को भी मारना था अतः कंस उन्हें वहाँ भेजता और प्रभु खेल २ में उन्हें मार देते थे। भगवान् की माखन लीला में राजनीति थी क्योंकि ब्रज से सब माखन श्रृण रूप में कंस को भेजा जाता था। भगवान् ने

स्थितो स्यन्दने महति स्वैतर्हयैर्युक्ते ततः शब्दस्तमुलोऽभवत् ॥ सहसैवाभ्यहन्यन्त स

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पुणवः। नकगोमुरवाः ॥

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः। पाण्डुं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥



سوچا کہ اس سے دشمن کو قوت ملتی۔ یہ وہاں نہیں جانا چاہئے۔ نیز گروپوں کا  
اُن پر بہت ہی پیار تھا۔ جس دن کرشن جی اُن کے گھر نہیں جاتے تھے وہ  
رو رو کر انہیں پکارتی تھیں اور ماکھن کھلاتی تھیں۔ بھگوان ہر ایک  
کام معجزے کے طور پر انجام دیتے تھے۔ ایک بار گھر میں ماکھن کی منگلی تڑپ  
دی۔ جسودا جی نے اُسے ایک اوکھلی سے باندھ دیا۔ بھگوان نے اوکھلی کو  
ٹیرٹھا کر دیا۔ پیل رجن کا ادھار (خلاصی) کیا۔

جب کنس کو بہت دن ہو گئے تب ناراجی نے اس کو کہا کہ آپ بھگوان کرشن  
اور اُن کے بڑے بھائی کو دھنشن یگیہ کے بہانے بلاؤ اور تین کروڑ کنول کے  
پھول لانے کو کہو۔ کنس نے کروڑ کو ان دونوں بالکوں کو لینے کے لئے بھیجا  
اور حکم دیا کہ اگر اتنے پھول نہ بھجوائے تو سارے گوکھلی کو جہنم میں بھیجے  
اگر ورجی نے سب ماجر اندرجی کو سنا لیا۔ ماما جسودا نے کرشن سے کہا کہ  
آج دودھ کھیلے مت جانا، لیکن پر بھونے سب دوستوں کو ساتھ لیکر  
جہنم کنارے گیند کا کھیل شروع کیا۔ جب بھگوان کے پاس گیند آئی  
تو انہوں نے اسے جہنم میں پھینک دیا اور پھر خود بھی اُس میں کود پڑے۔  
وہاں کالی بانگ کو قابو میں لا کر اُس کے پھین پر نہا چنے لگے اور اسی پر



स घोषो धातराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् । नमश्च पृथिवी चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥

॥१६॥ : अन्तर्भावः कालात्माः कालात्माः कालात्माः ॥१६॥

बल मिलता है वहाँ नहीं जाना चाहिए । दूसरे गोपियों का उन पर बहुत स्नेह था । जिस दिन कृष्ण जी उन के घर नहीं जाते तो उस दिन वे रो-रो कर पुकारती थी घोर घाने पर माखन खिलाती । भगवान् प्रत्येक कार्य लीला द्वारा करते थे । एक बार घर में माखन की मटकी फोड़ दी । यशोदा जी ने ऊखल से बाँध दिया भगवान् ने ऊखल को तिरछा करके यमुलाजुन का उद्धार किया । जब कंस को बहुत दिन हो गये तब नारद जी ने आकर कहा कि आप दोनों बालकों को घनुष यज्ञ के बहाने बुलाओ और तीन करोड़ कमल के पुष्प लाने को कहो । कंस ने भक्त को दोनों बालकों को लेने के लिए भेजा और आज्ञा दी कि यदि इनने पुष्प नहीं भिजवाये तो सारे गोकुल को यमुना जी में बहा देंगे । भक्त जी ने सब समाचार नन्द जी को सुनाया । माता यशोदा ने कृष्ण से कहा आज दूर खेलने मत जाना । लेकिन प्रभु ने सब सलाहों को साथ लेकर यमुना किनारे गेंद का खेल शुरू कर दिया । जब भगवान् के पास गेंद आई तो उन्होंने यमुना में फेंक दी और फिर स्वयं भी उसमें कूद पड़ी । वही कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया

महात्थः शिखण्डी च परमेष्वासः काश्यपः सहदेवश्च सुधोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥ नकुलः सहदेवश्च सुधोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ।





تین کروڑ کنول کے پھول

منگا لیے اگر ورجی جب

بلازم اور کرشن کو لے جانے

لگے تو تمام برج ان کی ہڈی

میں رو رہا تھا۔ تب بھگوان

نے ان کو سمجھایا کہ ہم جلدی

لوٹ آئیں گے۔

متھرا پہنچ کر گولیا پڑ نامی ماتھی کو نجات دلائی۔ کشتی کھیلنے کے دور

بے شمار پہلوؤں کو چھپاڑا۔ اپنی ماما دیو کی جگا کا بدلہ لینے کے لئے کنس کو

بالوں سے کھینچ کر، پکڑ کر اور مار کر اُسے سُکتی بخشی۔ واسد پو اور

دیو کی کو قید سے رہائی دی۔ کنس کے والد اگر سین کو قید سے نکال کر

تخت شاہی پہنچایا۔ جبراسندھ اپنے داماد کا بدلہ لینے کے لئے

سترہ بار فوج لے کر آیا۔ بھگوان نے ان تمام کا خاتمہ کیا، پھر جب

اٹھویں بار اُس نے حملہ کیا تو بھگوان دُور کا چلے گئے اور رات بھر یہ

تمام لوگوں کو دُور کا پہنچا دیا اور خود ایک پہاڑی کے پیچھے سے نکل کر



इतीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते ।

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽव्युत ॥२१॥

वही कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया  
और उसी पर तीन करोड़ कमल के पुष्प मंगवाये । भकूर  
जो बलराम, कृष्ण को ले जाने लगे, तो समस्त बज  
विरह में रो रहा था तब भगवान ने उनको समझाया  
कि हम जल्दी आयेंगे । मथुरा पहुँच कुवल्यापीड हाथी  
का उद्धार किया । मल्ल युद्ध में अनेक मल्लों को  
धराशायी किया । अपनी माता देवकी का बदला  
लेने के लिए ऊपर बँठे कंस को केश पकड़ कर  
मार कर उसका उद्धार किया । वसुदेव और देवकी को  
मुक्त किया । कंस के पिता राजा उग्रसेन को कारागार  
से निकाल कर उन्हें राज सिंहासन पर बिठाया ।  
जरासन्ध अपने दामाद का बदला लेने के लिए सत्रह  
बार सेना लेकर आया । भगवान ने सबका ही नंहार  
किया । जब अठारहवीं बार उसने युद्ध किया तो भगवान  
द्वारिका चले गए और रात भर में सब लोगों को  
द्वारिका पहुँचा दिया और स्वयं एक पहाड़ी के पीछे  
से निकल कर कूद पड़े । जरासन्ध ने सोचा इतने

अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिञ्चजः ।  
नमश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥२१॥

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।



کود پڑے۔ جبرائیل نے خیال کیا کہ اتنی اونچائی سے کود کر بچے نہیں  
ہونگے تاہم پہاڑوں کے ارد گرد آگ لگوا دی۔ پھر خوش دلی سے بسوٹا  
کرنے لگے۔

ادھر جھوماسر نے راجاؤں کی سولہ ہزار کنیاؤں کو اغوا کر کے انہیں  
حراست میں رکھا ہوا تھا۔ انہوں نے بھگوان سے التجا کی، اس پر بھگوان  
نے جھوماسر کو قتل کر کے ملکتی دلائی۔ پھر ان کے پرار تھنا کرنے پر پتی رو  
میں تسلیم کیا۔

کوروں پانڈوؤں کی آپ میں دشمنی تھی۔ پانڈو بھگوان کرشن کے  
معتقد تھے۔ کوروؤں نے جمے کی چال چل کر پانڈوؤں کو ہرا دیا اور  
سب کچھ داؤ پر لگوا دیا۔ بھری سبھا میں دروپدی کو ننگا کرنا چاہا۔  
لیکن بھگوان نے ساڑھی کو اتنا دراز کیا کہ خود دُشاسن کھینچے کھینچے  
مار گیا۔ ان کو جھٹک بھیج دیا گیا۔ کبھی لاکھ کے محل میں آگ لگوائی، کبھی  
زہر دیا۔ لیکن پر بھو سب طرح سے ان کی حفاظت کرتے رہے۔ مہابھارت  
کے جنگ میں ارجن کے رتھبان بنے۔ جنگ میں جب ارجن کو موہ سہیا  
تو اسے گیتا کا اُپدیش دیا۔ جبرائیل کو بھیم کے ماتھوں مروا دیا۔ آخر



एवमुक्तो

हृषीकेशो

गुडाकेरोन

भारत ।

सेनयोरुभयोर्योऽप्ये स्थापयित्वा रयानमम् ॥

॥६६॥ : धाकृतः ॥ ॥६६॥

उंचे से बचे नहीं होंगे और फिर पहाड़ी के चारों ओर घाग लगवा दी, फिर प्रसन्न मन से रहने लगा । उधर भीमासुर ने राजाओं की सोलह हजार कन्याओं का अपहरण करके उन्हें बन्दी बनाया हुआ था उन्होंने भगवान से प्रार्थना की तब प्रभु ने भीमासुर का वध करके उन्हें मुक्त किया । फिर उनके प्रार्थना करने पर उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया । कौरव और पांडवों की छापस में शत्रुता थी । पांडव भगवान कृष्ण के भक्त थे । कौरवों ने जुए का प्रपंच रचकर इनको हरा दिया । तथा सब कुछ दाँव पर लगवा दिया । भरी सभा में द्रोपदी को नग्न करना चाहा लेकिन भगवान ने साड़ी को इतना बढ़ाया कि स्वयं दुःशासन खींचते-२ हार गया । वन में भेज दिया, कमी लाक्षागृह में घाग लगवाई, विष दिया । किन्तु प्रभु सब तरह से उनकी रक्षा करते रहे । महामारत के युद्ध में अर्जुन के सारथी बने । युद्ध में जब अर्जुन का मोह होगया तब उसे गीता का उपदेश दिया । जरासन्ध को भीम के द्वारा मरवा दिया । अन्त में

समागताः

य एतेऽत्र

यानानवेक्षेऽहं

यानानवेक्षेऽहं

॥६७॥

योद्धव्यमस्मिन्

समुद्यमे

कर्मणा सह

योद्धव्यमस्मिन्

समुद्यमे

यावदेताभिरीक्षेऽहं योद्धव्यमस्मिन्



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥

अथ

सेनपुरुषव्यापि ।

तान्समीक्ष्य सकान्तयेयः सर्वान्धनधनवस्थितान् कृपया

पर्यावृष्टि

पर्यावृष्टि

अन्त में विजय पाँडवों

की हुई क्यों वे धर्म की लड़ाई लड़ रहे थे । हमेशा धर्म की विजय होती है । पाँडवों को राज्य दिला कर प्रभु द्वारिका आगये । जनवान कृष्ण की सीला का वर्णन कहाँ तक किया जाए । यह लेखनी विषय नहीं है विस्तार से वर्णन श्री भागवत में है ।

मानस-किंकर कोशलकिशोर वास

فتح پانڈوؤں ہوئی کیونکہ وہ دھرم کی لڑائی لڑ رہے تھے۔  
فتح ہمیشہ دھرم کی ہوا کرتی ہے۔ پانڈوؤں کو لاج دلا کر  
پرکھو دوار کا گئے۔

مانس کنکر کوشل کشور داس

۲۵۔ دیروں اور بھیشم ڈے تھے وہاں جے تھے وہیں راجگان جہاں  
کہا دیکھ ارجن کھڑے صف بہ صف۔ لڑائی کی خاطر کرو سرکف  
۲۶۔ تب ارجن نے دیکھا کھڑے ہیں تمام۔ چچے دانے۔ اساد ذی  
کہیں بیٹے پوتے کہیں یاد ہیں۔ برادر ہیں۔ ماموں میں غمخوار ہیں  
۲۷۔ بخیرے کوئی کوئی دلبند ہے۔ کہ اک سے لگا اک پیوند ہے۔  
جگر سے جگر کی لڑائی ہے آج۔ کہ لڑنے کو بھائی سے بھائی ہے آج۔

विषीदन्निदमब्रवीत् । भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम् ।

उवाच पार्थ पश्य तान्समवेतान्कुरुनिनि ॥ २५ ॥ तत्रापश्यत्स्थितान्यार्थः पितृन्थ पितृमहान् ।



# ہرے کرشنا !

کرشنہ ہتو! ہتو! ہتو! ایسے بکین پوشہ دار کر!   
 بانسری شہ دتو دتو   
 ددو نن شاہمار کر   
 باغ نشاط گل پھولن۔ گوہن دل تہ شل برن   
 کرشنہ! دنانہ از مرز   
 شبنم مس موقتہ مار کر   
 چانہ گیشیا مہ ترہایہ نش صبح بکین تہ شرمہ پیو   
 سیرہ موہ کھس ننہ کر تھ   
 حاکم تن کر دگار کر   
 باغ نسیمہ عطر ترہاٹھ۔ سیرہ ہوا پیہ وار کر ان   
 پوشہ پدین ترہہ کتھ کری   
 توتہ ہمیس اماہ کر



پیار وینیمیم بر زلف چانه دیایه کن نظر !  
 کز شبنم دیاله یودنه یکم  
 سونته بلن بپسار کمر  
 نیچو نه کمر دلبری گلن - یس نه کمر دلبری گموا  
 در شنکو بر مژر تهن  
 پریمه ستی دل تیار کمر  
 از ته گنگایه بهیچو به زهن - چانه وومید تیار کمر  
 کل مبه رمس رمس گلن  
 کیاہ پکے روم مبه تیار کمر  
 تار شکار سول به سول - مانز کھیلنس نه گزند یون  
 وونی اگر لانکه پیچ تر کمر  
 میون دل شرمسار کمر  
 چانه خیاله کنو ونم - ساسه بدی دل پسند سوخن  
 فاضلن تاز تر غزل  
 از پنن اشتہار کمر



## हरे कृष्णा !

कृष्ण' यितो यितो यितो ! स्यकित्यन पोशिजार कर  
 बांसुरी शाह दितो दितो ! द'दवनन शालमार कर  
 बागि निशा'त गुल फीलन, गुपियन दिल त शिल ब्रमन  
 मेठि, दहान' कर सौखन, शब्रममस भ्वस्त'हार कर  
 चानि ग्येशामि छायाि तल. सुबहि निगीन ति शार्मि प्यव  
 सिरिय मोखस नन्यर क'रिथ हा'रतन किरदगार कर  
 वागि नसीम' अ'तरि छठ, आयाि बेबायि वर करान  
 पोशि पद्यन च्य गथ करिय, तोति ह्म्यस अमार कर  
 प्यारवन्यन य'म्बर जलन, चानि पोत छाई कुन नजर  
 कृष्णा' दयाल 'यो'द न यिख, सोन्त' बलन व्यमार कर  
 यम्य न कर दिलबरी गुलन, यस न' क'र दिलबरी गुलव  
 दर्शनक्य वर मुचर तिमन, प्रेम' रस वागुजार कर  
 अज ति गंगायाि ब'ध्य ब्रह्मन चानि' वो'मेजि तारिक्र'यं  
 कल मे' रुमस रुमस गनन, क्याह यिमय रुम मे' तार कर  
 तार' शिकारि स्वल ब स्वल हां'ज' ख्यलिस न ग्रंद यिवन  
 वोन्य अगर लांकि प्यठ तरख म्योन दिल शर्मसार कर  
 चानि खयाल किन्य वनिम, सासबद्य शार दिलपसन्द  
 फाजिलुन ताजतर गजल, क्याह पनुन इश्तिहार कर





کرشنہ! چھو کہتم رنگ تہ بے رنگ پان گوم  
 بے رنگی منز چان پریمک رنگ سنیوم  
 پریمہ رنگ پر او حقہ گئے رنگ نظر آم  
 اتھو رنگس منز سر یہ پر اگاش دل بنیوم



Krishn Leela

کرشن لیلہ

कृष्ण लीला

ڈاکٹر نظام الدین پروفیسر آف ہندی، اسلامیہ کالج برسر نگر

کشمیر کے رسکھان

فاضل کشمیری نے بالک اوستھا اور کرشن لیلہ نامی  
کرشن کاویہ کی تخلیق کر کے سور داس رسکھان پر مانتہ  
نروتم داس رتنا کر سبہر مہینہ بھارتی کی روایت کو قائم  
رکھا ہے۔ اس کے ساتھ قومی یک جہتی کو بڑھا دینے میں ہم  
انہیں امیر خسرو، ظفر اکبر آبادی، ساغر نظامی، بیگل اتساہی



اور نصیر بنارسی وغیرہ کی روایت میں نمایاں پاتے ہیں۔ انہوں نے  
 ستگور و سری بابا گورو نانک کی بانی کا ترجمہ کر کے ایک عظیم  
 کارنامہ انجام دیا ہے جس کی سراسر کھ قوم نے کی ہے۔  
 فاضل کشمیری ایسے وسیع القلب شاعر ہیں جو تخیل کی  
 ہم آہنگی کے تاروں کو جھنکار عطا کرتے ہیں۔ وہ پُر خلوص  
 ماحول کے تخلیقی کام میں جُٹے ہوئے ہیں۔ ان کے اشعار میں  
 بانسری کے میٹھے سُرخیلی ہم آہنگی کا پیغام دیتے ہیں جو کوئی  
 اس سر کو سُنتا ہے ججے ججے ہری پکارتا ہے۔ اس کا دل پاک  
 ہو جاتا ہے، وہ بادشاہ ہو جاتا ہے۔ پھر اس میں ہندو مسلمان  
 کی تمیز نہیں رہتی۔ فاضل صاحب کمرشن جی کو گنگا کا ایسا پاؤں چل  
 (پلو ترپانی) تصور کرتے ہیں جو ہندو اور مسلمان کے دلوں کے  
 میل کو دھو ڈالتا ہے۔ کمرشن گو پوشہ و گنگا یہ ہندو جبل  
 چھلان ہندوین مسلمانوں کو مل  
 فاضل صاحب کمرشن کی بانسری پر مہرت ہیں، کیونکہ اس کا  
 سر پریم آتما ہے۔ جلوہ روشنی حیات ہے اور ساز دلبری ہے



مری در کِشَن اِس میں چھونک مار کر گیان و عرفان کے  
ظاہری و باطنی راز عیاں کرتا ہے جس سے اطرافِ عالم میں  
کیف و سرور چھا جاتا ہے جس سے نبی اور اوتارِ ایشور  
اللہ کے بھیجے ہوئے تسلیم کئے جاتے ہیں۔ اور رحمان و  
بجلوان ایک ہی ذات باری کے دو نام ہیں۔

فاضلِ صابِ کِشَن کے رنگ و روپ پر مہرِ ہمت ہیں  
انہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ چھوکوں میں رنگ و بو کِشَن کی  
بدولت ہے اور انہیں کے دمِ قام سے یہ سنسار ایک حسین  
گلزار بنا ہوا ہے۔

فاضلِ صابِ کی یہ کتاب "کِشَن لیل" بھارتیہ کِشَن کاویہ  
میں ایک گرِ نقدِ اضافہ ہے اس سے قومی ایلکتا پر اعتقاد  
رکنے والوں کے دل و دماغ اور زیادہ روشن ہو جائیں گے

للم السلام

( DR. NIZAM-UD-DIN )

Prof. of Hindi

Islamia College, Srinagar  
(Kashmir)

ترجمہ: پرتھوی ناتھ کول سیال کشمیری



*Dr. Jagat Mohani*

M. B., B. S.

King Edward Medical College, Lahore (Punjab Old)

MEDICAL SUPERINTENDENT

RATTAN RANI HOSPITAL 10 A. M.-4 P. M.

GYNAECOLOGIST & OBSTETRICIAN

## بھگوان کرشن نے

گیتا جی میں ارشاد فرمایا ہے :-

خاک، پانی، آگ، ہوا، خلا، من، ذہانت اور خودی۔  
ان آٹھ متضاد اقسام سے میری پڑ گرتی بنی ہے۔ یہ میری  
آرتیہ اوستھا ہے۔ اوستھا کو بھی سمجھنے کی کوشش  
کرو۔ اس کے علاوہ میری اُتم اوستھا سویم ہی میں ہے۔  
جس پر ساری کائنات کا دار و مدار ہے۔ تم اس بات کو  
سمجھ لو، کہ تمام جاندار اور بے جان انہیں دوسے بنے ہیں۔  
میں اس بدلتے سنسار کی ابتداء ہوں اور اختتام بھی۔



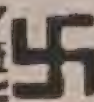
دکھنا پینہینے کے درمیان جو کہ آٹھویں کرشن پاکھش کے  
 کالے پندرہ والے میں آتا ہے، جیل کی ایک کالی کوٹھری میں، جہاں  
 موت کے کالے سائے منڈلا رہے تھے، آدھی رات کے عالم میں  
 ممبرک ساعت پر ایک سیاہ فام بچے، کرشن نے جنم لیا۔  
 گیتاجی کی بھاشا کی روشنی میں کرشن کے معنی "کالے کے ہیں"  
 جس کی مناسبت کرشن پاکھش کے تاریک پندرہ واڑے کے ساتھ  
 ہے۔ یہ وہ ستم تھا جب جلّت کے تمام رہنے والے لوگوں میں  
 ناشمبھی، جہالت اور پاپ کا دور دورہ تھا۔۔۔ اندھکار کے اس  
 دور میں کرشن جیسے روشن ضمیر رہنا کے وجود کی تشدد ضرورت تھی  
 جو اس رات میں ظہور میں آیا۔ اسی ذات نے کالے کرتوت والے  
 منشوں کو روشنی بخش کر مکتی کا راستہ دکھایا۔ انہیں گیتاجی  
 کے درس سے برہمانڈ کی اصلیت اور مایا کی ماہیت سے واقف کیا  
 بھگوان ہری جو کرشن کے روپ میں اپنی بال اوستھا کے کھیل کود  
 جیسے مکھن چوری، گائے پالک، مڑی منوہر کھیلتا رہا۔ ان میں سے ہمارے



کرشن کے مری منوہر ہونے کو بڑی اہمیت حاصل ہے کیونکہ جب پیار



بھگوان کرشن ججا مری بجاتے تھے تو اُس میں سے شانتی اور سکون کے  
لہرے پیدا ہوتے تھے جن سے سُسنے والوں پر محویت کا عالم چھا جاتا تھا۔  
کرشن جی سیکھو لرازم کے اولین پرچارک تھے۔ انہوں نے لوگوں کو  
بھائی چارہ اور یکسانیت کا درس دیا اور سماج کے زیرِ پلے سانپوں اور





رہنہوں کو بھی قابو کر لیا اور ان کا سدھار کیا۔



کرشن جی دھرم کے محافظ سیاست دان اور ایک عظیم رتھ بان تھے۔  
 انہوں نے انسان کو دنیاوی جھنجھٹوں سے آزاد کر دیا۔ وہ ہمہ دان اور  
 حق پرست تھے۔ وہ پاندوؤں کے دوست اور پشت پناہ تھے۔ انہوں نے  
 ظلم و تشدد، جلعساری اور دغا بازی جیسے شریر عناصر کو جڑ سے  
 اکھاڑا۔ ان حقائق کا ذکر مشہور رزمیہ مہا بھارت میں ملتا ہے۔



ہمارے فاضل صاحب ایک کرشن بھگت ہیں۔ رسالہ  
 "دھرم یگ" کے تنظیمی ادارہ نے انہیں "کشمیر کا رسکھان" کا  
 خطاب دیا ہے۔ کیونکہ انہوں نے رسکھان کی طرح کرشن بھگتی  
 کا بھرپور اظہار اپنے شبدوں میں ہمارے سامنے پیش  
 کیا ہے۔ انہوں نے کرشن کے بچپن، جوانی اور زیریںہ سال  
 کے سندر مرقعے سجائے ہیں۔ ان کی کتاب "کرشن لیلا"  
 کی لیلیاؤں میں ترنم، تاثیر اور گداز ہے۔ ان کے اس  
 عظیم کام سے سوشل ازم اور قومی یکت کے میدان  
 میں اچھے نتائج برآمد ہوں گے۔

میری دعا ہے کہ یثودھا کا بالک کرشن جو داییں ہاتھ  
 میں حلوا، بائیں ہاتھ میں مکھن کا پیڑا نگلے میں زردق برق جواہر  
 کا ہار، شیر کے ناخنوں سے آراستہ بدن ہمارے فاضل صاحب کو  
 ابدی مسرت عطا کرے!

83-8-30  
 (ڈاکٹر جگت موہنی)



کشمیری علم و ادب اور قومی یکتا کے کار کو بڑھا دینے کے  
 سلسلہ میں فاضل کشمیری نے شری جپ جی صاحب اور  
 سلوک مہلہ لڑاں اور ستھ رنگ کے بعد اس بار اپنی  
 کرشن لیلیاؤں کا یہ حسین گلدستہ بالک اوستھا عوام کے  
 بہبود کے لئے منظرِ عام پر لانے کی بار آور کوشش کی ہے،  
 جو واقعی ایک اہم کارنامہ ہے۔ مجھے اُمید ہے کہ اس  
 دلکش کتاب کی اشاعت سے قومی بھائی چارہ کی وسعت  
 میں دور رس نتایج برآمد ہوں گے۔

علی محمد لکھنوی  
 علی محمد لکھنوی

سرنگر کشمیر  
 ۱۹ نومبر ۱۹۸۳ء



PROF. CHAMANLAL SAPRU

180-Lalnagar, P. O. Natipur  
Srinagar (Kashmir) 190 015

ارد : پروفیسر چمن لال سپرو

بھگوان شری کرشن نے اپنی لیلیاؤں سے سب کو یکساں طور پر  
اپنی طرف کشش کی ہے۔ اُن کا بالک سُور داس اور رس خان  
جیسے عظیم شاعروں کے لئے پرستش کا موجب بن گئے ہیں۔ ان دو  
شاعروں نے اپنے محبوب بھگوان کرشن سے متعلق والتسلیہ رس یعنی  
شفقتِ مادرِی کا جذبہ سے مملو نظموں کو تخلیق کر کے ہندی ادب  
کو امر بنا دیا ہے۔

کشمیری زبان کے رس خان الحاج فاضل کشمیری ایک ایسی  
شخصیت ہیں جو حقیقی معنوں میں اُن تنگ حدود سے بالاتر ہیں جو  
آج کے انسان کو مذہب اور رنگ و نسل کے فرق میں جکڑے ہوئے  
ہیں۔ فاضل صاحب موجودہ دور میں تمام مذاہب کی بنیادی وحدت کو سمجھ کر



اپنی سُربلی زبان اور مخصوص پیرائے میں اس کا پیر چادر کرتے ہیں وہ  
 پرمہنس رام کرشن مہاراج کے سرودھرم سمنوے (Harmony of religions)  
 کو آج کے دور کے مسائل کا واحد حل تصور کرتے ہیں۔ وہ گیتا جی  
 مقدس انجیل، قرآن شریف اور سہی گورو گرنٹھ صاحب میں ایک ہی  
 پیغام کی مختلف صورتیں دیکھتے ہیں۔

فاضل صاحب کو میں نے دھارمیک محفلوں اپنی کرشن لیدائیس  
 سنا تے دیکھا ہے۔ وہ ایسی محفلوں میں اپنی شاعرانہ صلاحیتوں سے  
 ایک پُر کیف سماں باندھ دیتے ہیں۔ اُن کی زبان میں سلاست،  
 روانی اور تاثیر ہے۔ اُن کی شعری زبان ایسی سہل اور جاذبِ توجہ  
 ہے جسے پڑھنے والے اور سُننے والے بغیر کسی کدو کاوش کے آسانی  
 سے سمجھ کر بھرپور حظ اٹھاتے ہیں۔

اس بار فاضل صاحب نے بالک اونسٹھا کی کتابت و ترمیم  
 اپنے من چاہے انداز میں خود کی ہے، جو اُن کا ہی حصہ ہے۔

یحیٰی لال سپرو

25.1.86

25-1-1984



देवी

संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।

भवन्ति संपदं देवीमभिजातस्य भारता ॥३॥

॥२॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

Fazil Kashmiri is,  
I have understood, un-  
Paralled devotee of Lord  
Krishna. Although he is  
born muslim, but he is  
no longer now muslim  
in a strict theological sense,  
or Pandit. He is actually  
established in that state  
of divine devotion of Lord  
that has risen in that  
state where he has gone  
above limitation of  
Caste creed and colour.  
He is just devotee of Lord  
Krishna. I hope this

अध्याय १६

श्रीभगवानुवाच ॥ अमयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।

दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरप्यशुभम् ।



ॐ भूतसर्गा लोकेऽस्मिन्देव आसुर एव च । देवो विस्तराजः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥६॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

book 'Krishen Leela'  
will illumine the  
whole world.

I hope that each &  
every human being  
should and must own  
this valuable book, so  
that they also rise to  
that state of divine  
oneness where limita-  
tion of caste and creed  
are not recognised.

6-11-83. Lakshmanjoo  
Guptagaunga

(मिर्जापुरी स्वामी लक्ष्मण जो महाराज - गीत गंगा सरस्वती)

शैवाचार्या स्वामी लक्ष्मण जो महाराज

अबानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥ देवी संपद्मिमांसाय निबन्धायासुरी मता ।

दम्भो दपोऽभिमानश्च क्रोधः पातक्यमेव च ।



فاضل کاشمیری ایک مذہب زدہ ذات نہیں ہیں۔ وہ

اپنے مذہبی عقائد کے دوش بدوش دوسرے دین و دھرم کے  
بانیوں اور پرستاروں کی اقدار کا احترام کرتے ہیں جس کے  
ایک میں ان کی انوارِ محمدی شری جب حبِ صاب اور کرشن لپلا  
جیسی گرائف در تصانیف پیش کی جاسکتی ہیں۔

زیر نظر ان کی تصنیف "کرشن لپلا" ان کی کرشن بھگتی  
کی تصویر ہے۔ فاضل مصنف نے اس میں سری کرشن جی مہاراج  
پر سندِ نظمیں لکھی ہیں۔ انہیں سنکر اور پڑھ کر سامعین  
اور قارئین روحانی کیف و گداز حاصل کرتے ہیں۔ میلادوں،  
خالصہ درباروں اور مہا التسوؤں میں حاضرین انہیں اپنا کلام  
سنانے کی فرمائشیں کرتے ہیں اور ان کی قدر دانی کرتے ہیں۔  
فاضل صاب کے ادبی مطبوعہ شہپاروں سے ہمارے  
دیس میں قومی یکتا اور بھائی چارہ کو قوت ملتی ہے۔

میلاد ام نجیون --- گوگرباغ

۲۶ فروری ۱۹۸۴ء





*Symbol of Better Tomorrow*

Save a little for your

**FUTURE**

*in Various Deposit Schemes*

**of**

**Jammu & Kashmir Bank**

**Tailormade to Suit everybody's  
requirements**

**For details please step into  
at any nearest Branch/Office  
of**

**Jammu & Kashmir Bank.**

---

---



कृष्ण-लीला

# Krishna Leela

*This Beautiful Book  
of the Personality of*

## Krishna

provides the key to how humanity can become united in  
peace, prosperity and friendship around a common cause.

Printed at Hind Samachar Printing Press,  
Pacca Bagh, Jalandhar City.



# Krishna Leela

*This Beautiful Book  
of the Personality of*  
**Krishna**

*provides the key to how humanity can become united in  
peace prosperity and friendship around a common cause*

*By*

*Alhej Fazil Kashmiri*  
*R/- Gulshan Nagar, Champora, Srinagar*  
*KASHMIR-190015*